अंतरा

अर्धवार्षिक पत्रिका, अंक–9, 26 जनवरी, 2016

देशीय ज्ञान विशेषांक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम निदेश

- ❖ अंतस के आगामी अंक में प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।
- ❖ रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क नम्बर का उल्लेख अपेक्षित है।
- ❖ लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।
- ❖ अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- ❖ प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- ❖ अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी भी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- ❖ अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मण्डल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदाई नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी!
- ❖ रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ में सुनीता सिंह से उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स-आभार
संपादक मंडल

अंतरा परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

परामर्शदाता
प्रोफेसर अजित चतुर्वेदी
उपनिदेशक

मुख्य संपादक
प्रोफेसर भारत लोहनी

संपादक
डॉ. वेदप्रकाश सिंह

संपादन-सहयोग
प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
डॉ. कांतेश बलानी
डॉ. अनुराग त्रिपाठी
डॉ. अर्क वर्मा
चन्द्र प्रकाश सिंह
विष्णु प्रसाद गुप्ता

अभिकल्प (Design), संकलन
सुनीता सिंह

अनुवाद
जगदीश प्रसाद
भारत देशमुख

छायाचित्र
रवि शुक्ल

सहयोग
विद्यार्थी हिंदी साहित्य सभा

संकेतक

पूनम लहूरा

शुभेच्छा
निदेशक की कलम से 1
उपनिदेशक की दृष्टि में 2
सम्पादकीय 3

गुरुदक्षिणा
श्री तरनबीर सिंह 4

साक्षात्कार
सी डैक के निदेशक, डॉ. रजत मूना 6

अतिथि लेख
भारतीय ज्ञान व्यवस्था, मिशेल दनिनो 10

सरोकार
भौतिक चिकित्सा, डॉ. संजय भगत 36

साहित्य यात्रा
देशीय ज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान 12
प्रथमान्तिम 13
ऐ चाँद तेरा धर्म क्या? 14
कठिन परिश्रम 15
आज मैं बारिश से मिला 15
पुनर्जन्म 16
लुप्तता की ओर बढ़ता जल का खजाना 17
अनंत यात्रा 18
मत परिवर्तन 19
जिंदगी-मौत का वार्तालाप 21
राष्ट्र निर्माण : देशीय भाषा बनाम अंग्रेजी 24
आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम! 28
अजनबी 29
वों दो दिन...क्यों? 30
नीड़ 35
एक अंजाना सफ़र 35
भाषाओं का सम्मेलन 38
जब आप आए 39
सूरज की वंदना 39
छीन ले हे ईश्वर 39
मर्म 40

परिसर की गतिविधियाँ (छायाचित्र)
हिंदी दिवस 22
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर रंगारंग कार्यक्रम 23

विरासत
विदा (कविता-महादेवी वर्मा) 41

बालबत्तीसी
जागो रे, जागो रे, जागो... 42
चशमिश 42
ज्ञानी का ज्ञान 43
आओ सीखें 44

भाषा-विमर्श
राजभाषा की संवैधानिक स्थिति एवं उसका अनुपालन 45
व्याकरण की परिभाषा 46

कार्यालयीन उपयोगी टिप्पणियाँ

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से

प्रिय पाठकगण ! अंतस का नवम् अंक आपके समक्ष है। सर्वप्रथम मैं आप सबको बधाई देता हूँ कि हमारी यह पत्रिका कुछ समय पूर्व गोवा में आयोजित "अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं चिंतन शिविर" में "श्रेष्ठ हिंदी पत्रिका प्रतियोगिता" वर्ग "क" में "विशिष्ट पुरस्कार" से सम्मानित की गई । मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं है कि यह केवल आप सुधी पाठक गणों, संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ, पत्रिका की संपादन समिति, इसकी सुरुचि-पूर्ण कलात्मक साज-सज्जा और इसके भागीदार लेखकों तथा रचनाकारों के सक्रिय सहयोग के कारण ही संभव हो सका है।

मुझे सबसे अधिक खुशी इस बात की है कि उच्च तकनीकी शिक्षा के हमारे इस संस्थान में ऐसे अनेकानेक विद्यार्थी हैं जिनकी हिंदी साहित्य के प्रति न केवल गहन अभिरुचि है वरन् वे हिंदी साहित्य में गंभीर पैठ भी रखते हैं। साहित्य और कला के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी इस सक्रियता का मैं अभिनंदन करता हूँ।

मुझे आशा है कि अंतस को प्राप्त विशिष्ट पुरस्कार हमारी साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में अवश्य सहायक होगा और हिंदी के प्रति आपकी यह प्रतिबद्धता उसे अधिकाधिक ऊर्जावान बनाएगी।

एक बार पुन: मंगलकामनाओं सहित।

धन्यवाद

इ. मान्ना

इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

शुभेच्छा

उपनिदेशक की दृष्टि में

देशीय ज्ञान अंतस पत्रिका के इस अंक की केन्द्रीय विषय वस्तु है। पत्रिका के नौवें अंक के इस थीम से ही आपके मानस में दर्शन, आध्यात्म ज्ञान, आर्थिक, कलात्मक ज्ञान इत्यादि ने दस्तक देनी शुरू कर दी होगी परन्तु हम यहाँ उससे आगे की बात करना चाहते हैं। हमारे लिए न केवल यह जरूरी है कि हम अपने प्राचीन देशीय ज्ञान को सजगतापूर्वक भलीभाँति आत्मसात करें, वरन् साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था को ऐसी दिशा दें कि हमारे शिक्षार्थी अपने देश में ही ईजाद तकनीकी ज्ञान की विभिन्न विधाओं से, देशीय उपलब्धियों से अपने राष्ट्र का मान-वर्धन करें। मेरे विचार से देशीय ज्ञान की यही पहली सीढ़ी है। यदि हम प्राचीन वैज्ञानिक पद्धतियों का आधुनिक तरीके से शोध एवं परीक्षण करें और समाज के लिए जो उपयोगी ज्ञान हो, उसे आगे बढ़ायें तो इससे उसकी प्रामाणिकता वैश्विक स्तर पर स्वत: ही स्थापित हो जाएगी।

गणतंत्र दिवस की आप सभी को बधाई!

धन्यवाद

अजित चतुर्वेदी

अजित चतुर्वेदी
उपनिदेशक

शुभेच्छा

सम्पादकीय

'अंतस' के नवें अंक को आपको समर्पित करते हुये, अत्यंत हर्ष के साथ, मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि 'अंतस' के पिछले अंक को "राजभाषा सेवा संस्थान" द्वारा आयोजित "श्रेष्ठ हिंदी पत्रिका" प्रतियोगिता में विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप सुधीजन पाठकों के सुझाव व 'अंतस' के लिए काम करने वाले मेरे सहयोगियों के परिश्रम की बदौलत ही 'अंतस' इस ऊंचाई को छू सकी है। पिछले कुछ समय से हमने अंतस के हर अंक को एक विषयवस्तु पर केन्द्रित करने का प्रयास किया है। इसी क्रम में 'अंतस' का यह अंक Indigenous Knowledge पर केन्द्रित है। इस थीम के लिए उपयुक्त शब्द के वास्ते हमारे पास अनेक सुझाव थे, जैसे कि देशज ज्ञान, देशिक ज्ञान या देशीय ज्ञान। 'अंतस' की भाषा सरल स्पष्ट व सुवाच्य हो इस बात को ध्यान में रखकर हमने इस हेतु "देशीय ज्ञान" को चुना।

इस अंक में आप प्रोफेसर मिशेल दनिनो व प्रोफेसर अरुण शर्मा द्वारा देशीय ज्ञान, इसकी वर्तमान स्थिति व किस तरह इसका सदुपयोग किया जा सकता है, के बारे में जानेंगे। "गुरु दक्षिणा" स्तम्भ के अंतर्गत हमारे युवा पूर्वछात्र श्री तरनवीर सिंह के बारे में जान सकेंगे, जिन्होंने संस्थान से निकलने के कुछ समय बाद ही नई ऊँचाईयों को छूकर संस्थान का नाम ऊंचा किया है तथा संस्थान की तरक्की में अपना सहयोग दिया है। श्री तरनवीर सिंह अपने युवा सहपाठियों व कनिष्ठ साथियों के लिए एक उदहारण बनेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे साथी प्रोफेसर रजत मूना, जो कि वर्तमान में सी-डैक में निदेशक पद पर सुशोभित हैं, अपने साक्षात्कार में बता रहें हैं कि वह कैसे भारत की डिजिटल इंडिया मुहीम को पंख लगाने का काम कर रहे हैं। पूर्वछात्र श्री राहुल बिन्द की कहानी आपको संस्थान के गली-गलियारों में लेके जाएगी व कुछ अनुत्तरित प्रश्न आपके ज़ेहन में छोड़ जाएगी। इन सबके अलावा जिंदगी के रंगों से सरोबार अनेक कवितायें आपका इस अंक में स्वागत करेंगी, जिसमे मुख्यतया अनन्या नायर की कविता 'चशमिश' आपको बालमन में घुमड़ते विचारों से अवगत कराएगी।

अंत में आपको इस सड़सठवें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप अपना सहयोग व मार्गदर्शन 'अंतस' के लिए देते रहेंगे तथा अपनी और अपने प्रियजनों की रचनाओं को 'अंतस' में शामिल करते रहेंगे।

धन्यवाद

भारत लोहनी

भारत लोहनी
मुख्य सम्पादक

गुरुदक्षिणा

श्री तरनबीर सिंह

श्री तरनबीर सिंह

जैसे सूर्य बिना कहे सबको ऊर्जा देता है, मेघ पानी बरसाता है, वायु बिना किसी भेदभाव व लालच के शीतलता प्रदान करता है और फूल अपनी महक में कोई कसर नहीं रखता, वैसे ही गुरुजन भी शिष्यों की भलाई में निस्वार्थ लगे रहते हैं। उनका उद्देश्य शिष्य से गुरुदक्षिणा लेना नहीं, अपितु शिष्य को सूर्य की भाँति दैदीप्यमान करना होता है। संस्थान में गुरु-शिष्य परंपरा के सान्निध्य में छात्रों की शैक्षणिक उन्नति के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व में जो निखार आता है, वह उनके कर्म में दिखाई पड़ता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना स्वयं में समाहित किये हुए संस्थान के पूर्व छात्र अपने समाज, विशेष रूप से अपने मातृ संस्थान की उन्नति के लिए प्रयासरत रहते हैं। इस क्रम में संस्थान के प्रति समर्पण की भावना रखने वाले हमारे पूर्व छात्रों की नामावली में श्री तरनबीर सिंह जी का नाम उल्लेखनीय है। संस्थान की अर्द्ध-वार्षिक साहित्यक पत्रिका "अंतस" के स्थाई स्तम्भ 'गुरुदक्षिणा' में श्री तरनबीर सिंह जी के जीवन-वृत्त एवं संस्थान के प्रति उनके समर्पण पर प्रकाश डालते हुए हमें सुखद अनुभूति हो रही है।

श्री तरनबीर सिंह का जन्म पंजाब के गुरदासपुर जिले के छोटे से नगर धारीवाल में हुआ था। श्री सिंह के माता-पिता कृषक परिवार से ताल्लुक रखते थे तथा वे अपने परिवार में ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 12वीं कक्षा से अधिक पढ़ाई की थी। वर्तमान में आपके पिता पेशे से एक चिकित्सक हैं तथा माता जी अर्थशास्त्र की व्याख्याता रही हैं। श्री सिंह की आरंभिक शिक्षा लिटिल फ्लावर कान्वेंट स्कूल, धारीवाल में हुई थी। बचपन से ही श्री सिंह के मन में अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा का भाव रहा है। उनकी यह भावना और भी पुख्ता हो जाती है जब श्री सिंह स्कूल के दिनों में अपने विज्ञान पढ़ाने वाले श्री नरेश चावला एवं अंग्रेजी शिक्षिका सिस्टर सेलेस्टीन को याद करते हुए उन्हें अपना आदर्श बताते हैं। श्री सिंह प्रथम गुरु के रूप में माता-पिता की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी हासिल किया है, वह उनके माता–पिता के द्वारा दी गई शिक्षा एवं मूल्यों पर आधारित है। श्री सिंह के माता – पिता उनके सच्चे मार्गदर्शक रहे हैं।

श्री सिंह ने बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अपनी योग्यता एवं क्षमता के बल पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान

कानपुर के संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग में बी. टेक. की कक्षा में प्रवेश लिया। श्री सिंह ने कड़े परिश्रम से संस्थान में विद्या अध्ययन किया। श्री सिंह संस्थान की यादों का स्मरण करते हुए कहते हैं कि वे संस्थान में अपने मित्रों के साथ बिताए गए हर पल को याद करके रोमांचित हो जाते हैं।

श्री सिंह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से शिक्षा ग्रहण करने के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते थे। जब वे बी.टेक. तृतीय वर्ष की पढ़ाई कर रहे थे, उन्होंने तभी सिविल सर्विसेज की पढ़ाई आरंभ कर दी थी। किन्तु इस दौरान उन्हें स्विट्जरलैंड की EPEL कंपनी में इंटर्नशिप का अवसर मिला जहाँ पहुँचने के बाद उनकी सोच में थोड़ा परिवर्तन आया और उन्होने निश्चय किया कि वे प्रशासनिक सेवा में संलग्न होने से पहले देश-दुनिया को समझने का प्रयास करेंगे। श्री सिंह वर्ष 2006 में बी. टेक. की शिक्षा पूरी करने के बाद टावर रिसर्च कैपिटल नामक फर्म से जुड़ गए। चूँकि व्यावहारिक गणित, कंप्यूटर विज्ञान एवं अर्थशास्त्र उनके रुचि के विषय थे, अतः अपने पसंदीदा क्षेत्र में नौकरी पाकर वे काफी उत्साहित थे। आपके परम मित्र श्री सौरव जिंदल ने आपको टावर रिसर्च कैपिटल से जुड़ने में मदद की थी। टावर फर्म उस समय एक छोटी सी फर्म थी जिसमें लगभग 20 से 25 लोग काम करते थे। श्री सिंह को इस फर्म में काम करते हुए दस वर्ष हो चुके हैं और वहाँ वे काफी उत्साहित हैं। वे अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें बुद्धिमान लोगों के साथ काम करने का अवसर मिल रहा हैं।

गुरुदक्षिणा

वर्तमान में श्री सिंह टावर रिसर्च कैपिटल फ़र्म के पार्टनरों में से एक हैं।

बहुमुखी प्रतिभा एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी श्री सिंह संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए लिए सदैव आशान्वित रहते हैं। आपने इस संस्थान को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने में सराहनीय योगदान दिया है। श्री सिंह संस्थान को विशेष रूप से नये संकाय सदस्यों की भर्ती प्रक्रिया के लिए आर्थिक सुविधा बराबर मुहैया करा रहे हैं। विशेष बात तो यह है कि श्री सिंह संस्थान से पूरी तन्मयता के साथ जुड़े हुए हैं और नियमित रूप से अपना आर्थिक योगदान कर रहे हैं। श्री सिंह ने संस्थान के प्रति अपने स्नेह को जिस रूप में प्रकट किया है वह अन्य पूर्व-छात्रों के लिए उत्प्रेरक के समान है। संस्थान आशा करता है कि हमारे पूर्व-छात्र इसी तरह संस्थान की प्रगति में सकारात्मक एवं रचनात्मक भूमिका निभाते रहेंगे जो राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्थान को अपनी पहचान मजबूत करने में सहायक होगी।

राजभाष प्रकोष्ठ

विचार

बचपन में दी गई शिक्षा, संस्कार और नैतिकता किसी कॉलेज और युनिवर्सिटी में मिली औपचारिक शिक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है।

एपीजे अब्दुल कलाम

कविता

कारी बदरिया

घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,
भरी-भरी लायी मेघा जल की गगरिया,
लपक-झपक दिखे चंचल बिजुरिया,
कीच-कांधों से भरी घर की डगरिया,
घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,
घाघरा हरेरो कुर्ती, हरी सी चुनरिया,
हरी-हरी अवनि लागे, कमसिन गुजरिया,
तपे झरे पेड़ पौधे पावे नव-उमरिया,
घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,
नदी तड़्-तालाब भरे, भर गयी पोखरिया,
दादुर-मयूर छेड़े प्रणय की मुरलिया,
झींगुर झंकार करें, रात की अंधेरिया,
घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,
डोलत वृक्ष-बेल छुपी लता कजरिया,
मन को मोह रही, शीतल बयरिया,
गाय रहे कृमि-पतंग, हरषै मन मछरिया,
घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,
हँसै-ठिठोली करै, बैठि जा अटरिया,
संग-संग पूजैं सखी तीज कजरिया,
माँगैं अपने प्रिय की लम्बी उमरिया,
घिर-घिर आई सखी री कारी बदरिया,

अर्चना शुक्ला, शोध-छात्रा

डॉ. रजत मूना

डॉ. रजत मूना जी से मेरा संपर्क लगभग 20 वर्ष पुराना है। मुझे आई. आई. टी. प्रवेश परीक्षा के संचालन की जिम्मेदारी मिली थी। मेरे मन में विचार आया कि क्यों ना हम लोग छात्रों को उनके आवेदन प्राप्ति की सूचना फोन पर उपलब्ध करवा दें। मैंने अपना विचार रजतजी से बताया। उन्होंने तुरंत इस पर कार्य शुरू कर दिया और कुछ ही समय में यह सुविधा उपलब्ध हो गयी जिससे बहुत से छात्रों को लाभ मिला। हमारी मित्रता का प्रारंभ इसी के साथ हुआ। रजतजी बहुत हंसमुख स्वभाव के व्यक्ति हैं और सब के साथ सहजता से घुलमिल जाते हैं। उन्होंने स्मार्ट कार्ड के लिए बहुउपयोगी शोध कर इस तकनीक को भारतवर्ष में प्रचलित करने में सक्रिय भूमिका निभाई है । इस समय वह सी-डैक पुणे में प्रमुख निदेशक के पद पर कार्यरत रहते हुए देश में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

उनके साथ हुए वार्तालाप के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहा हूँ.

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : सी-डैक के महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र कौन-कौन से हैं तथा समाज के लिए इनकी क्या उपयोगिता है?

डॉ. रजत मूना : सी-डैक के प्रमुख विषय प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा संचार प्रौद्योगिकी हैं । सी-डैक की प्रमुख शोध गतिविधियों को कई विषयों के अंतर्गत विभाजित किया गया है । इन विषयों में प्रमुख रूप से सुपर कम्प्यूटिंग, ग्रिड तथा क्लाउड कम्प्यूटिंग सहित हाई परफार्मेंस कम्प्यूटिंग, कम्प्यूटर्स पर भारतीय भाषाओं सहित लैंग्वेज कम्प्यूटिंग, गवर्नेन्स एवं डिवाइस तथा मशीन ट्रांसलेशन सिस्टम, इंटीग्रेटिड सर्किट डिजाइन वाले इलेक्ट्रॉनिक्स, कंट्रोल सिस्टम डिजाइन, फ्री एवं ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर वाली सॉफ्टवेयर टेक्नालॉजी, साइबर डेटा सिक्यूरिटी तथा हेल्थ इन्फार्मेटिक आदि प्रमुख शोध विषय हैं। सी-डैक कई महत्वपूर्ण सुपर कम्प्यूटिंग प्लेटफार्मों वाला एक केन्द्र है जिसका भारतीय तथा विदेशी उपभोक्ताओं द्वारा आज के दौर में बखूबी इस्तेमाल किया जा रहा है तथा कई बार इनका प्रयोग time & critical applications के लिए भी किया जाता है। भारत के चुनाव आयोग द्वारा प्रयुक्त ICT जैसे कई सॉफ्टवेयर, जिसमें निर्वाचन संबंधी ऑनलाइन सूची के इस्तेमाल सहित मतदाताओं का राष्ट्रीय स्तर पर पता लगाने का कार्य भी किया जाता है, को भी सी-डैक द्वारा ही विकसित किया गया है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : डिजिटल इंडिया के सपने को साकार करने के लिए आपका संस्थान किस रूप में सहयोग कर रहा है?

डॉ. रजत मूना : डिजिटल इंडिया एक ऐसा उपक्रम है जो आज पूर्णरूप से भारत जैसे विशाल देश में प्रासंगिक नजर आता है । आज भारत में कई प्रकार के अवसर उपलब्ध हैं । हम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रगति कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में जैसे लैंडलाइन फोन के इस्तेमाल से लेकर अत्याधुनिक मोबाइल फोन का प्रयोग। भारत, मोबाइल फोन का सर्वाधिक इस्तेमाल करने वाले देशों में से एक है। भारत में हस्तचालित विधि का प्रयोग करके लोगों को शासित नहीं किया जा सकता। चूंकि भारत में घनी आबादी निवास करती है इसलिए डिजिटल इंडिया की सफलता से भारत में रोजगार के उचित अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। यह भारत के युवाओं को तकनीकी रूप से एक साथ जोड़े रखने का कार्य करता है। आज के दौर में युवा इसका प्रयोग करके सरकार तक पहुँचते हैं तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हैं। डिजिटल इंडिया के नौ स्तंम्भों में से कुछ स्तंभ जैसे (स्कूल पुस्तक से लेकर ई-पुस्तक) ई-क्रांति आदि ऐसी कई प्रौद्योगिकियाँ हैं जहाँ सी-डैक सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभा रहा है। सेफ सिटी, स्मार्ट सिटी, स्मार्ट एग्रीकल्चर तथा सी-डैक की अन्य पहल, डिजिटल भारत के सपने को साकार करने की दिशा में अग्रसर हैं। इसका एक विशिष्ट उदाहरण सी-डैक का Harita Project है जिसको आंध्रप्रदेश में लागू किया जा रहा है। इस परियोजना के माध्यम से फसलों की गुणवत्ता एवं मात्रा को बेहतर बनाने के लिए ऑप्टिकल विधियों का प्रयोग करके सेंसर्स द्वारा कृषि को और अधिक आधुनिक बनाया जा रहा है ।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : इस नेटवर्क के माध्यम से देश के समस्त गाँवों को जोडने में कितना समय लगेगा?

डॉ. रजत मूना : इस काम के लिए सरकार ने कई क्रियाविधियों का सृजन किया है। नेशनल आप्टिकल फाइबर नेटवर्क (NOFN) परियोजना के तहत ऑप्टिकल फाइवर के

माध्यम से गाँवों को जोड़ा गया है। उल्लेखनीय है कि इस नेटवर्क कनेक्टिविटी के माध्यम से गाँव में रहने वाली जनसंख्या को वास्तविक लाभ नहीं पहुँच रहा है । इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए (NOFN) परियोजना का पुनर्निर्माण किया गया है ताकि राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा इस क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी उपलब्ध कराई जा सके। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, मंनोरजन, दूरसंचार आदि प्रौद्योगिकियों को विभिन्न सेवा प्रदाताओं के माध्यम से और अधिक सुगम बनाने की योजना है। डिजिटल इंडिया उपक्रमों में 'इनफॉर्मेशन हाइवे' भारत सरकार का उच्च प्राथमिकता वाला क्षेत्र है । यह एक विशालकाय कार्य है, इसको लेकर राज्यों में उत्सुकता अधिक है तथा कई राज्य इस दिशा में पहल भी कर चुके हैं।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : सरकार की अधिकांश सेवाओं को ऑनलाइन करने में कितना समय लगेगा ?

डॉ. रजत मूना : कई सरकारी सेवाएं पहले ही ऑनलाइन की जा चुकी हैं। पासपोर्ट (पासपोर्ट सेवा) के लिए ऑनलाइन सुविधा इसका एक प्रमुख उदाहरण है । इनकम टैक्स सिस्टम पहले ही ऑनलाइन है। कई राज्यों में पुलिस इंटरफेस (जिसमें घटना की रिपोर्टिंग करने से लेकर क्लीयरेन्स लेने तक) के लिए ऑनलाइन सेवा शुरू हो चुकी है। आज कोई भी व्यक्ति मोबाइल ऐप के माध्यम से सरकारी सेवाओं के लिए आवेदन कर सकता है। स्कॉलरशिप एक दूसरा ऑनलाइन एप्लीकेशन है। ई-लॉकर सर्विस जैसी कई अन्य सेवाएं भी उपलब्ध हैं, जिनमें व्यक्ति अपनी मार्कशीट, डिग्री, डिप्लोमा जैसे दस्तावेजों को सुरक्षित रख सकता है। देश में कई सिटीजन सर्विस सेंटर्स जाति प्रमाण पत्र जारी करने जैसी सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं। आंध्र प्रदेश की Mee-sev परियोजना एक अत्यन्त सफल परियोजना है जिसकी सफलता को देखकर कई राज्यों में इसको दोहराया जा रहा है। स्वास्थ्य, गर्भावस्था की निगरानी तथा चाइल्ड केयर, औषधि आपूर्ति प्रबंधन, मलेरिया जैसी बीमारियों के फैलाव की निगरानी जैसी सेवाओं के प्रबंधन हेतु इस परियोजना को लागू किया जा रहा है। सरकार लोगों को ऑनलाइन जोड़ने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। आधार कार्ड परियोजना इसका एक प्रमुख उदाहरण है जिसके माध्यम से पात्र लोगों की प्रमाणिकता सिद्ध करके ऑनलाइन कार्यप्रणाली द्वारा उन तक लाभ पहुँचाया जा रहा है। यह देश की एक अति महत्वाकांक्षी परियोजना है जो अभी तक दुनिया के किसी भी देश में लागू नहीं है । अब यह परियोजना, ऑनलाइन दी जा रही सरकारी सेवाओं का एक अपरिहार्य अंग बन चुकी है। यह एक सतत् प्रक्रिया है तथा अन्य प्रौद्योगिकीय प्रचार-प्रसार की भाँति इस प्रौद्योगिकी को भी सतत् बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : सूचना प्रौद्योगिकी हमारे सामाजिक जीवन को कैसे प्रभावित कर रही है?

डॉ. रजत मूना : इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा ही जटिल है क्योंकि जहाँ एक ओर सूचना प्रौद्योगिकी लोगों को नजदीक ला रही है वहीं दूसरी ओर सूचना प्रौद्योगिकी लोगों को दूर भी ले जा रही है। व्यक्ति उस वक्त अपने माता-पिता की आँखों में चमक देख सकते हैं जब वे अपने बच्चों एवं नातियों से कई सौ किलोमीटर दूर बैठकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा वेब कांफ्रेन्सिंग के माध्यम से बात कर करते हैं। इसकी अनुभूति ठीक उस समय भी की जा सकती है जब व्यक्ति घंटों तक अपनी प्रेमिका से बातें करता है। सोशल मीडिया हमारे घरों के अंदर दस्तक दे चुका है। सोशल मीडिया के दौर में व्यक्ति एक छत के नीचे रहते हुए भी आपस में एक दूसरे से बहुत कम ही बातें करता है। मैं मानता हूँ कि यह मानवीय जिंदगी के क्रमिक विकास का एक अंग है। व्यक्ति इसको अक्सर इस रूप में नहीं देखता। यदि व्यक्ति इसको इस रूप में देखेगा है तो वह पायेगा कि व्यक्ति द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी मानवजाति की भलाई के लिए ही निर्मित की गई है। किसी भी घटना के दो पहलू होते हैं जैसे (सिक्के के हमेशा दो पहलू) होते हैं। प्रौद्योगिकी का बुद्धिमतापूर्ण तरीके से प्रयोग आज के दौर की महती आवश्यकता है जैसा कि आदिकाल में हमारे ऋषि मुनियों ने भी कहा है 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। यह बात आज भी पूर्णरूप से प्रासंगिक नज़र आती है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : इंटरनेट को सस्ती दर पर आम लोगों की पहुँच में लाने के लिए किस प्रकार के प्रौद्योगिकीय अविष्कार किये जा रहे हैं?

डॉ. रजत मूना : आज के दौर में मोबाइल सेवा ने गाँवों, विकासखण्डों एवं शहरों में काफी लोकप्रियता हासिल की है। मोबाइल के माध्यम से इंटरनेट सेवा को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। स्मार्टफोन पर आजकल आसानी से इंटरनेट का प्रयोग किया जा रहा है और इस प्रकार के स्मार्टफोन की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। 3 जी एवं 4 जी जैसी प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करके तीव्र इंटरनेट सेवाएं हासिल की जा सकती हैं। आज इस प्रकार की सेवाएं हर जगह उपलब्ध हैं। आज इंटरनेट के फ्रंटएण्ड इंटरफेस का मुद्दा कोई बड़ी बात नहीं रह गई है; हालाँकि कई जगहों पर हम देखते हैं कि इंटरनेट की गति धीमी होती है। ऐसा इसलिए

होता है क्योंकि ऐसी जगह पर बैक एण्ड इसके मार्ग को अवरूद्ध कर देता है। इंटरनेट सेवाओं को और अधिक बेहतर बनाने के लिए इन्फॉर्मेशन्स इन्फ्रास्ट्रक्चर (इन्फॉर्मेशन हाईवे) में भारी निवेश करने की जरूरत है । आज भी कई परिवार अपने घर पर इंटरनेट का सतत् प्रयोग करने हेतु ब्रॉडबैंड के स्थान पर मोबाइल आधारित कनेक्टिविटी का ही प्रयोग करना अधिक पसंद करते हैं। ऐक्सेस डिवाइस-चाहे वो फोन हो, टैबलेट हो, लेपटॉप हो या फिर टी. वी. आज सब प्रासंगिक साबित हो रहे हैं तथा इन सभी पर इंटरनेट का प्रयोग आसानी से किया जा रहा है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : भविष्य में इंटरनेट के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए हमारा देश किस प्रकार की भूमिका निभाने जा रहा है?

डॉ. रजत मूना : कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर हमारा देश इंटरनेट के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए अहम भूमिका निभाने जा रहा है। यह सेवा अब एक उद्योग के रूप में उभर चुकी है। आज कई सूचना प्रौद्योगिकी प्रमुख, देश तथा विदेश में कंपनियों तथा सरकारों को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह इस क्षेत्र में भारी परिवर्तन की ओर एक संकेत है। अभिकल्प गतिविधि प्रगति पर है। उन्नत अवस्था में है। बौद्धिक संपदा के अभिकल्प एवं उसके स्वामित्व के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी आज देश का भविष्य बनने जा रही है। सरकार देश के अंदर ही विनिर्माण पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। यद्यपि मेक-इन-इंडिया कार्यक्रम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति लाने हेतु अपनी अहम भूमिका निभाने जा रहा है तथापि इस प्रकार का विशाल सूचना प्रौद्योगिकी इन्फ्रास्ट्रक्चर होने के वाबजूद भी, एक बड़ी समस्या इन्फॉर्मेशन सिक्यूरिटी सेवा की उपलब्धता के क्षेत्र में बनी हुई है। सरकार ने इस समस्या को प्राथमिकता के आधार पर लिया है । कई अवसरों पर हमारे प्रधानमंत्री इस समस्या का उल्लेख एक गंभीर समस्या के रूप में कर चुके हैं और उन्होंने उम्मीद जताई है कि भारत एक दिन साइबर सिक्यूरिटी के क्षेत्र में विश्व के लिए अगुवा के रूप में अपनी भूमिका निभाएगा ।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : डेटा क्षति एवं सिक्यूरिटी मुद्दे की समस्या से देश कैसे निपटेगा ?

डॉ. रजत मूना : साइबर सिक्यूरिटी एक महत्वपूर्ण विषय है । सिक्यूरिटी कोई पृथक एवं स्वतंत्र अंग नहीं है। इसे डिजिटलाइजेशन का एक अभिन्न अंग बनना ही पड़ेगा। विशाल डेटा सेन्टर सरीखे कई सिस्टम डेटा को दूसरी प्रति (duplicate) के रूप में भी संरक्षित करके रखते हैं ताकि किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना में डेटा को किसी भी रूप में क्षति न पहुँचे । इस प्रकार के डेटा को उस समय प्रयोग में लाया जाता है जब प्राथमिक डेटा सेन्टर से डेटा नष्ट हो जाता है। भारत में बैकएण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण उच्च विश्वसनीयता एवं बहुतायत में किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि डेटा की क्षति एवं इसकी सिक्यूरिटी की समस्या से आसानी से निपटा जा सके। इसका कई बार प्रदर्शन भी किया जा चुका है। अभी हाल ही में आधार कार्ड के डेटा सेन्टर को भी उसकी सेवा एवं कार्यों को बाधित किये बिना स्थानातंरित किया गया है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : इंटरनेट के अत्यधिक प्रयोग का समाज पर क्या प्रभाव पड रहा है?

डॉ. रजत मूना : जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि किसी भी चीज की अति खराब होती है। इस प्रकार इटंरनेट का प्रयोग भी समझदारी के साथ ही किया जाना चाहिए ।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : देश में कम्प्यूटर साक्षारता को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं?

डॉ. रजत मूना : नेशनल स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि भारत में डिजिटल इंडिया के सपने को साकार करना है तो फिर देश में कम्प्यूटर साक्षरता अति आवश्यक है। कई राज्यों ने लोगों को ऐक्सेस डिवाइस उपलब्ध कराया है। सी-डैक सहित कई संस्थानों ने उन लोगों के लिए कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम प्रारंभ किये हैं जो डिजिटल क्रांति से अछूते रह गये हैं । ऐसे लोग जो कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी से परिचित नहीं है उनको कम्प्यूटर साक्षरता की मुख्य धारा में लाना भारत सरकार की उच्च प्राथमिकता है ।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : देश के अन्दर बन रहे अधिकांश सॉफ्टवेयरों की गुणवत्ता अच्छी नहीं है । इस क्षेत्र में देश को अगुवा बनने के लिए क्या करना चाहिए ?

डॉ. रजत मूना : यह सही धारणा नहीं है । आज भारत के अंदर भारी संख्या में सॉफ्टवेयरों का निर्माण किया जा रहा है। कई बार हम देखते हैं कि मल्टीनेशनल कंपनियों में प्रयुक्त किये जा रहे बड़े-बड़े सॉफ्टवेयर भारत में ही विकसित किये जा रहे हैं ।

सॉफ्टवेयर की गुणवत्ता अथवा उसका बेहतर प्रयोग उनके सतत् अभ्यास से ही आता है। आमतौर पर सस्ती और घटिया वस्तुओं (जिसको जुगाड़ बोलते हैं) को खरीदना भारतीय समाज की आदत में शुमार है। हमें इन सॉफ्टवेयरों में मितव्ययी

इनोवेशन (जो इनोवेशन सस्ते हैं) से अंतर करना होगा। जब कभी हमारे मस्तिष्क में गुणवत्ता की बात आती है तो वह उसी वक्त आती है जब हम ऐसे जुगाड़ द्वारा विकसित सॉफ्टवेयरों का प्रयोग करते हैं।

उल्लेखनीय है कि सिंगापुर,जापान आदि देश आज गुणवत्ता उत्पाद के लिए जाने जाते हैं। एक समय था जब गुणवत्ता पर कम ध्यान दिया जाता था। ताइवान एवं चीन जैसे देशों से हमें गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त होते हैं। हालाँकि इन देशों में कम गुणवत्ता वाले उत्पाद भी उपलब्ध हैं। आज जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत है वह यह है कि हमें अपने दैनिक जीवन में गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए तत्पश्चात् यह उत्पाद एवं सेवाओं में भी प्रतिबिंबित होने लगेगा।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : हमें देश के अन्दर कम कीमत पर अच्छे कम्प्यूटर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है । इस दिशा में क्या कदम उठाने की जरूरत है?

डॉ. रजत मूना : हाल के दिनों में कम्प्यूटर के क्षेत्र में अविश्वसनीय परिवर्तन देखने को मिला है। डेस्कटॉप कम्प्यूटर का प्रचलन कम हुआ है जबकि लेपटाप, नोटबुक, टेबलेट्स तथा फोन सहित मोबाइल डिवाइस का प्रचलन बढ़ा है । हमें इन सभी उपकरणों को भारत में निर्मित करने का प्रयास करना चाहिए जिसके फलस्वरूप निश्चित रूप से इनकी कीमतों में भारी कमी आ सकती है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में एक शिक्षकविद् तथा सी-डैक में एक प्रशासक के तौर पर आप अपनी नई भूमिका में किस तरह का अंतर देखते हैं?

डॉ. रजत मूना : यह प्रश्न मुझसे कई लोगों ने पूछा है । दोनों ही भूमिकाएं मुझे बहुत संतुष्ट करती है। एक ओर शिक्षक के रूप में मुझे नई प्रतिभाओं के साथ बातचीत करने, उनके विचारों से उत्साहित होने तथा उनके विचारों को मूर्त रूप देने के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है। यहाँ पर अक्सर परिपक्वता तथा प्रोत्साहन की कमी देखने को मिलती है। कई बार अच्छे विचारों को निरंतरता की कमी के कारण मूर्त रूप नहीं दिया जा सकता था। शिक्षा जगत में हर साल 25-30 प्रतिशत लोग नये आते हैं। इससे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलता है। वही दूसरी ओर सी-डैक ने मुझे उत्कृष्ट सहयोग एवं अधिकार प्रदान किया है। इस अधिकार का प्रयोग करके लोगों के कल्याण के लिए कार्य किये जा सकते हैं। हालांकि यहाँ पर समयबद्धता उतनी सख्त नहीं है जितनी एक शिक्षक के रूप में देखने को मिलती थी।किसी भी व्यक्ति के लिए अंतिम

समय-सीमा ज्यादा सख्त नहीं है। सी-डैक के साथ वार्तालाप विभिन्न स्तरों पर होता है । यहाँ पर सेवारत कर्मचारियों को वर्षों का व्यावसायिक अनुभव प्राप्त है।

डॉ. सर्वेश चन्द्रा : नई उभरती हुई प्रतिभाओं को आप अपनी ओर से क्या संदेश देना चाहेगें ?

डॉ. रजत मूना : प्रौद्योगिकी दृष्टिकोण से देश सही कार्य कर रहा है। आज सूचनाओं एवं सेवाओं के डिजिटलाइलेशन की अति आवश्यकता है। डिजिटल इंडिया का सपना साकार होने जा रहा है जिसके फलस्वरूप इनोवेशन के क्षेत्र में भारी भरकम अवसर उपलब्ध होगें।

अब समय आ गया है जब व्यक्ति को अपनी खुद की क्षमताओं पर विश्वास और भरोसा करना होगा। यदि हमें अपने ऊपर विश्वास है तथा दूसरों पर भरोसा है तो विश्व की ऐसी कोई ताकत नहीं है जो हमें सफलता हासिल करने से रोक सके।

प्रो. सर्वेश चन्द्रा

भारतीय ज्ञान व्यवस्था

प्राचीन विश्व की सभ्यताओं में शायद भारतीय सभ्यता ही एकमात्र ऐसी सभ्यता है जिसमें ज्ञान को एक देवी के रूप में माना गया है। ज्ञान और उसके आदान-प्रदान की प्रक्रिया को पवित्र माना जाता रहा है। एक पुरानी कहावत है कि कोई शिक्षक कितना ही विद्वान क्यों न हो, यदि वह अपने ज्ञान के शिक्षण हेतु सुयोग्य शिष्य नहीं खोज पाता तो यह उसके लिए नर्क जाने के समान है। बहुत सी ऐतिहासिक नक्काशियों में गुरुओं द्वारा शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते हुए दिखाया गया है; और जब एक तिब्बती सन्यासी धर्मस्वामिन ने 1235 में नालंदा विश्वविद्यालय, जिसे चार दशक पहले बख्तियार खिलजी द्वारा विंध्वस कर दिया गया था, के खंडहरों की यात्रा की, तो उन्होंने देखा कि एक 90 वर्षीय शिक्षक जिनका नाम राहुल श्रीभद्र था, 70 विद्यार्थियों की कक्षा को पढ़ा रहे थे; जो शायद नालंदा विश्वविद्यालय की अंतिम कक्षा रही होगी जिसे वह वयोवृद्ध शिक्षक हठधर्मितापूर्वक पढ़ा रहे थे।

ज्ञान उस समय व्यवस्था विहीन नहीं था। समय के साथ सुव्यवस्थित तरीके से भाषा, दर्शन एवं अध्यात्म, गणित एवं ज्योतिष विद्या, चिकित्सा, कला, शासन एवं प्रशासन, नीतिशास्त्र आदि के व्यवस्थित ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। इस बात से हमारे विद्वान भली-भाँति परिचित हैं।

बहुत सी "परिधीय ज्ञान की शाखाएं" जिनके विषय में कम लोग जानते थे, भी निर्मित हुईं : कृषि, पशुपालन, जल प्रबंधन, नगर योजना... इनसे सबंधित विशेष ज्ञान का संकलन हुआ, जिसे आज कम ही पढ़ा जाता है। क्या हम जानते हैं कि प्राचीन भारतीय कैसे हाथियों को पोषित एवं प्रशिक्षित करते थे? वे कैसे जंग-रोधी लोहे के उत्पादन के लिए विशिष्ट अयस्क की पहचान करते थे? कैसे वे मौसम की भविष्यवाणी करते थे या भूमिगत जल का पता लगाते थे? वे कौन सी युद्ध कलाओं की शिक्षा देते एवं उनका अभ्यास कराते थे? वे कैसे अपनी फसलों को बीमारी से बचाने हेतु बीजों का उपचार करते थे?

आज हम लोगों में से जो 'तर्कसंगत' होने का दावा करते हैं, वे अक्सर प्राचीन ज्ञान व्यवस्थाओं को 'पूर्व वैज्ञानिक' बताकर उन्हें अस्वीकार कर देते हैं। इसीलिए वे अधिक से अधिक इन ज्ञान व्यवस्थाओं को केवल जिज्ञासा शांत करने

का तरीका या निकृष्ट रूप से व्याप्त अंधविश्वास मानते हैं। किन्तु जब भी इन व्यवस्थाओं की कठोर परीक्षा ली गई, वे

उपयोगी सिद्ध हुईं। आज भी वृक्षायुर्वेद की सहायता से बेहतरीन जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशक बनाये जा रहे हैं; उत्खनन से प्राप्त या पुस्तकों में उल्लिखित जल भण्डारों की तुलना में आज हमारे जल के भण्डार अव्यवस्थित, मँहगे तथा अप्रभावी हैं। आज आयुर्वेद की माँग फिर से बढ़ी है जो इसकी क्षमता का परिचायक है। आखिरकार कुतुब मीनार के परिसर में खड़ा सोलह सौ साल पुराना लौह स्तंभ हमारी प्राचीन तकनीकी की गुणवत्ता की ओर ही संकेत करता है।

ये सभी उदारहण यद्यपि रोचक हैं किन्तु वे भारतीय ज्ञान व्यवस्थाओं को पूर्ण रूप से इंगित नहीं कर पाते। मैं यहाँ उनकी तीन विशेषताओं का उल्लेख करूँगा। पहली विशेषता थी परंपरा के सातत्य तथा संचयन को बनाए रखना : विद्वान सामान्यतः अपने पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा किये गये कार्यों को नष्ट नहीं करते थे, बल्कि उन्हें आगे बढ़ाते थे। दूसरी विशेषता बौद्धिक स्तर पर टीका-टिप्पणी करने की स्वतंत्रता थी जिसने इन व्यवस्थाओं को और सुदृढ़ किया। हम देखते हैं कि कौटिल्य युद्ध के विषयों पर राजनीति विज्ञान के पूर्ववर्ती विचारकों से असहमत थे तथा ब्रह्मगुप्त ने आर्यभट्ट के पृथ्वी के परिभ्रमण सिद्धान्त को सिरे से खारिज किया। तब धर्म की परीक्षा होने का तथा धार्मिक सिद्धान्त थोपे जाने का भय नहीं था। समीक्षाओं का एक विशाल भण्डार (और कभी–कभी समीक्षाओं की भी समीक्षा) जिनमें से कई दुर्भाग्य से गुम हो चुकी हैं, अनवरत एवं अथक बौद्धिक बहस, परिचर्चा एवं विसम्मति की गवाह हैं।

अंततः प्राचीन समय में विश्व के अन्य बहुत से स्थानों के समान भारत में भी ज्ञान को कठोर श्रेणियों में वर्गीकृत नहीं किया जाता था। ज्ञान के विस्तार को संकुचित नहीं किया जाता था जैसा आज होता है। भारत की रेखागणित की उत्पत्ति का स्रोत जटिल अग्नि वेदियाँ एवं त्याग-तपस्या का दर्शन रहा है। गणितीय सारतत्व जैसे शून्य या अपरिमितता की संकल्पनाएँ अपने दार्शनिक समकक्षों से घनिष्ठता से जुड़ी रही हैं। आर्यभट्ट की अनादि एवं अनंत काल की अवधारणाएँ, भारतीय खगोलविदों द्वारा युगों एवं कलियुग का उपयोग, पंचतत्व एवं त्रिदोषों पर आयुर्वेद के मत, सभी भारत की दार्शनिक एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं में गहनता से व्याप्त हैं। ऐसा नहीं है कि अकारण ही बीसवीं सदी के श्रॉडिंगर (Schrodinger) या हाइज़नबर्ग (Heisenberg) जैसे भौतिक वैज्ञानिकों ने वैदिक अवधारणाओं से प्रेरणा ली हो। सर्न (CERN) संस्था में, जहाँ उपपरमाण्विक कणों (subatomic particles) की खोज अनवरत चलती है, नटराज की मूर्ति 'परम' कणों (ultimate particles) के नृत्य के प्रतीकात्मक रूप में प्रयुक्त होती है।

आज की सपाट एवं संकुचित शिक्षा पद्धति में ज्ञान की प्रचुरता एवं उसके दृष्टिकोण ओझल से हो चुके हैं। भारत के युवा अपने देश की विशाल बौद्धिक विरासत को नहीं के बराबर जानते हैं, वहीं कतिपय बुद्धिजीवी इसका उपहास उड़ाते हैं। इन कारणों से भारतीय ज्ञान व्यवस्था का काफी ह्रास हो चुका है। संभवतः इतना भी विलंब नहीं हुआ है कि हम अपने कुछ होनहार युवाओं को न समझा सकें कि अभी भी वे अपने पूर्ववर्ती लोगों के ज्ञान से संपन्न, समृद्ध तथा प्रेरित हो सकते हैं। इसके बाद ही हमें समझ में आएगा कि क्यों 'फील्ड्स मेडल'(Fields Medal) विजेता मंजुल भार्गव ने कहा था कि उन्हें न केवल प्राचीन भारत के गणितज्ञों से बल्कि अपने तबले के अभ्यास एवं संस्कृत भाषा के ज्ञान से भी प्रेरणा मिली थी।

मिशेल दनिनो The Lost River : On the Trail of the Sarasvati (Penguin India] 2010) के लेखक हैं तथा वर्तमान में आई.आई.टी. गाँधी नगर में अतिथि संकाय हैं।
ईमेल : micheldanino@gmail.com

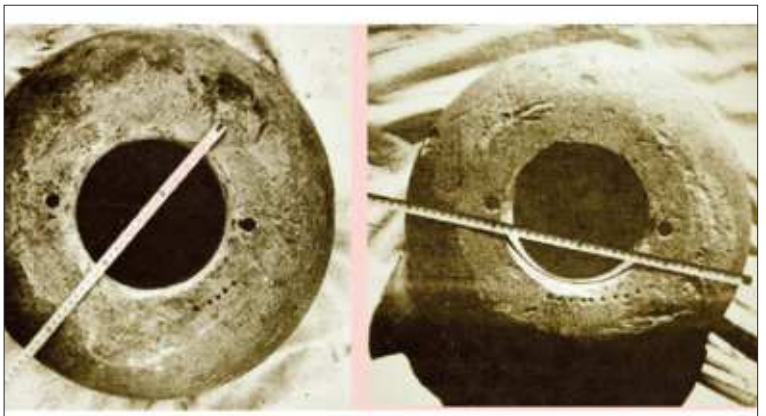

he ring-stones found at Mohenjo-daro, with rows of small drilled holes that to point to the sunset across the year. (Courtesy: Erkka Maula)

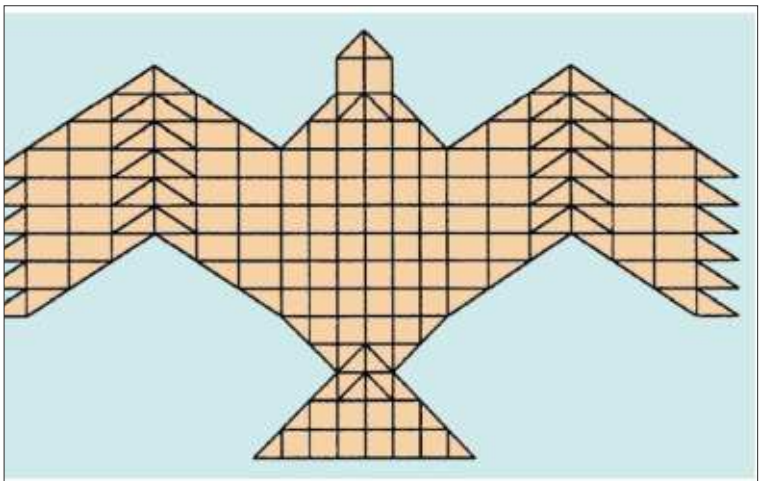

layer of one kind of *śyenaciti* or falcon altar described in the *Śulbasūtras*, made of bricks of six shapes or sizes, all of them adding up to a specified total area,

विचारें

मन को शान्त और शुद्ध करने का सबसे आसान उपाय एकान्तवास, संयम और ध्यान धारणा है। जितना ही शुभ चिन्तन में मन लगाओगे उतना ही तुम्हारा आध्यात्मिक विकास होगा।

स्वामी यतीश्वरानन्द

स्वार्थ भावना से जो सेवा की जाती है, वह परोपकार नहीं, प्रवंचना है।

श्रीराम शर्मा आचार्य

देशीय ज्ञान और सामाजिक विज्ञान

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य औपनिवेशिक देशों के वर्तमान सामाजिक चिंतन की आलोचना और देशज ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में नवीन चिंतन परंपरा की आवश्यकता पर बल देना है। ध्यान देने योग्य है कि हमारे समाज विज्ञान का जन्म भी विज्ञान व तकनीक के अन्य आधुनिक विषयों की भांति पश्चिम में एवं समान परिस्थितियों में ही हुआ है और इसकी पृष्ठभूमि में जो दो चीजें रही हैं वे हैं: औद्योगिकीकरण से उत्पन्न सामाजिक समस्याएँ तथा धर्म-मुक्त चिंतन की एक नवीन विधा। लगभग 200 वर्ष पहले पश्चिमी देशों में हुए औद्योगिकीकरण ने मनुष्य की सृजन-क्षमता एवं उत्पादकता में अभूतपूर्व तथा गुणात्मक परिवर्तन कर दिया, जिसके फलस्वरूप मनुष्य को ऐसा लगने लगा कि विज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य की समस्या का समाधान संभव है, किन्तु यथार्थ यह भी है कि विकास और प्रौद्योगिकी के साथ दारिद्र्य, असमानता, और बेरोजगारी आदि जैसी समस्याओं को मिटाने में न केवल वह असफल रहा बल्कि इसके उलट औद्योगिकीकरण तथा आर्थिक विकास ने स्वयं अनेकों सामाजिक और नैतिक समस्याओं को लाकर खड़ा कर दिया। हालाँकि पश्चिम के विद्वानों ने यह बात तत्काल देख ली। इस अनुभव से एक ऐसे चिंतन का जन्म हुआ जिसमें विज्ञान की सर्वमान्य पद्धतियों का प्रयोग करते हुए सामाजिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया गया। पश्चिमी विद्वानों के मतानुसार विज्ञान के समरूप एक ऐसे समाज विज्ञान को विकसित किये जाने की आवश्यकता थी जो मनुष्य की सभी समस्याओं का साथ ही साथ समाज के समस्त रोगों का वैज्ञानिक विश्लेषण करके उनका निदान प्रस्तुत कर सके। गणित और भौतिक विज्ञान की अतिशय सफलता के प्रभाव में इसका नामकरण भी शुरुआती दौर में ही कर दिया – "सामाजिक भौतिकी"। इसके दो भाग हैं– सामाजिक स्थितिकी, जो सामाजिक संतुलन का अध्ययन करती है तथा सामाजिक गतिकी जो समाज के परिवर्तनों का अध्ययन करती है।

देशीय ज्ञान और सामाजिक विज्ञान

सभी औपनिवेशिक देशों का अधुनातन सामाजिक विज्ञान उपर्युक्त पाश्चात्य दार्शनिक प्रवृत्ति से प्रभावित है तथा उसे आगे बढ़ाता है। इसमें विकास की रूपरेखा अथवा व्यक्ति और समष्टि के बीच के सम्बन्धों अथवा उनके मूल्य पर कोई चिंतन नहीं है। विकासशील देशों के संदर्भ में यह एक

मृत परंपरा है। इसके विपरीत पश्चिम का आधुनिक व परा-आधुनिक समाज विज्ञान एक जीवित परंपरा के रूप में उनकी निरंतर परिवर्तनशील गतिकी के साथ अच्छे से समावेशित है।

विकासशील देशों में उपलब्ध उपर्युक्त प्रकार का सामाजिक चिंतन उनकी समस्याओं के ऐसे हल प्रस्तुत करता है जो इन देशों की परम्पराओं के प्रतिकूल एक बाह्य चिंतन-पद्धति के सहारे तथा उनकी अपनी संस्कृति और चिंतन-पद्धति से मेल नहीं खाते। इस कारण उसके द्वारा प्रस्तुत अधिकतर समाधान वहाँ की स्थानीय समस्याओं को न केवल और जटिल बना देता है अपितु साथ ही साथ अनेकानेक नवीन समस्याओं को भी जन्म दे देता है। पर्यावरण की समस्या, गाँव से किसानों का पलायन, आर्थिक असमानता, गरीबी तथा कीटनाशकों आदि के विवेकहीन उपयोग से उत्पन्न कैंसर इत्यादि रोग ऐसी ही कुछ नवीन समस्याएँ हैं। सौ वर्ष पूर्व जब गांधीजी ने पश्चिमीकरण के बारे में अपनी मौलिक आलोचना प्रस्तुत की थी तो उसमें उनकी यही सोच स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। गांधीजी न केवल संसद के प्रति संशययुक्त थे, बल्कि आधुनिक शिक्षा, विधि-शिक्षा और आधुनिक चिकित्सा के प्रति भी उनके मन में अनेक प्रकार के संशय थे। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, विशेषतया सामाजिक ज्ञान और समाज सुधार के नियामकों ने हमारी कितनी बरबादी की है, यह प्रत्यक्षत: स्पष्ट है। अत: आवश्यकता है कि अपने समाज और अपनी समस्याओं के संदर्भ में अपनी चिंतन परम्पराओं के अनुरूप नए सिरे से सोचने की। अतंतोगत्वा अभी तक मजबूती से टिकी प्राचीनतम भारतीय सभ्यता में अपनी समस्याओं के समाधान संबंधी कुछ गूढ़ तत्व व सिद्धान्त ही तो विकसित होकर प्रचलन में रहे जिसके फलस्वरूप यह सभ्यता पाँच हज़ार वर्षों या उससे भी अधिक समय तक टिकी रही है।

दुर्भाग्य से अधुनातन समझे जाने वाले जिन सिद्धांतों को हम अपने श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों

में पढ़ते-पढ़ाते है, वे अमूमन देश के किसी काम नहीं आते। अत: नितान्त आवश्यक है कि हमारे समाज के वैज्ञानिक अपने समाज से धरातल पर जुड़ें और देशीय ज्ञान के अनुरूप हिन्दुस्तानी समाज की नई व्याख्या प्रस्तुत करें। हो सकता है कि इस नव समुद्र मंथन से ऐसा ज्ञान सृजित हो जो न केवल हिंदुस्तान के लिए अधिक प्रासंगिक हो अपितु अंतर्विरोधों और हिंसा से जूझती सारी दुनिया के लिए भी एक वैकल्पिक चिंतन प्रदान कर सके।

प्रश्न है कि इसकी शुरुआत कैसे हो और कहाँ से हो? क्या किसी ने कभी इस ओर कोई कदम बढ़ाया है? मुझे लगता है कि सर्वप्रथम हमें उन विद्वानों के मौलिक साहित्य का अनुशीलन करना होगा जो देशी परम्पराओं के साथ-साथ पाश्चात्य ज्ञान की भी अच्छी समझ रखते थे और जिन्हें समावेशन के प्रारूप की आवश्यकताओं पर अच्छी पकड़ थी। इस वर्ग में हम रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविंद घोष, महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया, राहुल सांकृत्यायन, दीनदयाल उपाध्याय, भीमराव अंबेडकर, नागराज शर्मा और समान विचार रखने वाले अन्य विचारकों जैसे श्री लंका के महान बुद्धिजीवी आनंद कुमार स्वामी को रख सकते हैं। राहुल सांकृत्यायन जीवन भर विभिन्न प्रतिमानों से जूझते रहे और अंत में मार्क्सवाद को समर्पित हो गए। किन्तु उनके लेखन में ऐसा बहुत कुछ है जो हमारी सहायता कर सकता है। समाज शास्त्र के क्षेत्र में राधाकमल मुखर्जी और डी. पी. मुखर्जी को रखा जा सकता है। आई. आई. टी. कानपुर के प्रो के. एन. शर्मा ने भी इस दिशा में कुछ कार्य किया था किन्तु तब तक उनके लिए देर हो चुकी थी। ऐसा करने के बाद धीरे-धीरे हम उन दार्शनिक प्रतिमानों तक पहुँच सकते हैं जो इस देश में स्मृतियों और न्याय के निर्माण के मूल में रखी गयी होंगी। ध्यान रहे कि परंपरा की आधुनिक (वैज्ञानिक) व्याख्याओं से हमारी बहुत क्षति हुई है। मुझे लगता है कि हमें सांख्य दर्शन, स्मृतियों, पुराणों और बौद्ध पीठिकाओं को साथ रख कर कुछ इस तरह के प्रयोग पुन: करने पड़ेंगे। हमें वे रास्ते खोजने होंगे जिन पर चलकर व्यक्ति के जीवन में कल्याण हो और समाज में आवर्तनशील ऐसा विकास हो जिसमें विज्ञान और विकास विनाश के पर्यायवाची न बन जाएँ।

प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा

प्रथमान्तिम

श्रोता बन प्रेरित होकर
एक दिवस कलम को हाथ में उठाया ही था
कि मेरे ज़ेहन में एक आवाज़ आई
क्या तुम भी अब मुझे लिखोगे?
मैंने ध्यान से मस्तिष्क में झाँका
एक, पंक्तियों की जीवन्त आकृति उभरी
आवाज़ वहीं से आ रही थी
क्या तुम भी अब मुझे लिखोगे?
वह कविता की आवाज़ थी
कविता अवसाद ग्रस्त थी
मैंने पूछा कि क्या कोई गलती हो गई?
आवाज़ आई नहीं, पर मैं एक प्रश्न पूछूँ
मैंने कहा अवश्य
आवाज़ आई क्या तुम्हारे पास आत्माओं का संकलन है?
मैंने कहा अर्थात्
क्या तुम कबीर, सूर, तुलसी, मीरा
और महान कवियों की तरह
हर छंद, हर पद, हर दोहे और चौपाई में
आत्मा को डाल पाओगे?
तुम तो खुद ही अपनी आत्मा को
अपने कर्मों के बोझ से दबाये बैठे हो
उसके बिछौने के अंगों से खेल रहे हो
हृदय में आग दर्शाते रहे हो
तुम स्वयं अपनी आत्मा नहीं संभाल पा रहे हो
मेरे अंदर क्या डाल पाओगे।
इसलिए तुम्हारा श्रोता ही बने रहना ठीक है
श्रोता ही बने रहना ठीक है
मैनें ध्यान से देखा
कलम स्वयं अपने हाथ से निकल चुकी थी
आकृति मेरे ज़ेहन से जा चुकी थी
और मुझे मेरी पहचान बता चुकी थी
कि मेरा श्रोता ही बने रहना ठीक है
श्रोता ही बने रहना ठीक है

श्री सी के सिंह, एडवोकेट

ऐ चाँद तेरा धर्म क्या ?

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि ऐ चाँद तेरा धर्म क्या है? कभी तू हिंदू बन जाता है तो कभी मुसलमान, तू सिख का भी है, ईसाई का भी।

कभी तू ईद का गवाह बनता है तो कभी करवाचौथ का, कभी हिंदू महिलाएं अपने पुत्र की दीर्घायु के लिए टुक-टुकी लगाए तेरा इंतजार करती हैं तो कभी इमाम साहब को तेरे दीदार होते ही ईद का जश्न शुरू हो जाता है।

ऐ चाँद क्या तेरा कोई मजहब नहीं? आज तुझसे पूछता हूँ जब तू किसी में कोई फर्क नहीं करता तो तेरे बाशिंदे क्यूँ?

आज मैं पूछना चाहता हूँ कि उन चरमपंथियों से कि कुसूर क्या है उन यजीदियों का जिनका जीवन समाप्त किया जा रहा है, जिनकी माँ और बहनों को असहनीय यातनाएं दी जा रही हैं, जिनके पिताओं का सिर काटा जा रहा है, सिर्फ इसलिए कि वो सूर्य जो किसी और मजहब के देवता हैं की पूजा करते हैं। जब चाँद का मजहब नहीं तो सूरज का मजहब कैसे हो गया? क्या उसकी रोशनी मजहब से पूछ कर आती है?

आज इराक और सीरिया में मानवता शर्मसार है। कोई तो बताए कि उस खुदा के बंदे अयलान कुदरी का कुसूर क्या था? जब समंदर की लहरों में उसका बचपन खो गया, जब उसकी नाव डूबी। तो कहीं न कहीं इंसानियत ने भी अपनी अंतिम सांसें ले ली। जिस किनारे पे उसकी किलकारियाँ गूंजनी थी उसी किनारे पर वो शांत सोया था। मैं पूछना चाहता हूँ, क्या वो खुदा का बंदा नहीं था? अभी तो उसे शायद ये भी न पता हो कि ये मजहब होता क्या है? जब उसे उसी मजहब ने अपने अपनों से दूर कर दिया।

मैं फिर पूछता हूँ ऐ चाँद तेरा धर्म क्या है?

मैं फिर पूछता हूँ ऐ चाँद तेरा धर्म क्या है?

मैं फिर पूछता हूँ ऐ चाँद तेरा धर्म क्या है?

अतुल कुमार श्रीवास्तव
कनि.सहायक

शील का स्वर्ण

स्वामी दयानंद जिस प्रकार जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं और स्थापित हितों का विरोध करते थे, उसे देखकर अनेक दकियानूसों को मन में चुभन होती थी। उन लोगों ने दयानंदजी की तेजस्विता घटाने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किये।

स्वामी जी के बारे में स्वामी श्रद्धानंद जी ने कहा - जो अधकचरे व्यक्ति चरित्रभ्रष्ट थे, वे भला इस शुद्ध सोने को कैसे पहचान सकते थे? जिनमें सार - असार को पहचानने की शक्ति नहीं, वे चरित्र कहाँ से गढ़ सकते हैं? ऐसे सत्व को पहचानने के लिए तो अपने में भी सत्व होना चाहिए।

जिसमें स्वयं में संतत्व का अंश नहीं, संत के संतत्व को वह अभागा जान भी कैसे सकता है? उसको तो दूसरे में दोष देखने में मजा आता है, जो दोष न हो उसे भी ढूँढ़ निकालने में रुचि होती है। ऐसे आसुरी स्वभाव वाले पामर व्यक्ति स्वयं अशांत होते हैं, परेशानी में जीते हैं और परेशानी ही फैलाते हैं।

कठिन परिश्रम

कठिन परिश्रम जीवन की परिभाषा है,
जिनके जीवन में बाकी अभिलाषा है।
जो नींद को रोक स्वप्न सच करते हैं,
जीवन रथ के स्वयं सारथी बनते हैं।
आँधी और तूफान उन्हीं को कहते हैं,
जिनके हम अतिरेक वेग को सहते हैं।
वो जो आँधी की परवाह नहीं करते,
वो जो गिरते शैलों से लड़ते-चलते,
वही पहुँच पाते हैं किसी किनारे तक,
जो लड़ते है जीवन के अँधियारे से।
जिन्हें चाँदनी अगर रिझाना चाहे भी,
कोमलता का लेप लगाना चाहे भी,
वो प्रतिवाद स्वयं से कर, बढ़ जाते हैं,
विपदाओं के शैल अनन्त चढ़ जाते हैं
कठिनाई जिन पैरों में डिग जाती है,
उनसे ही फिर स्वत: प्रेरणा आती है।
वो जीवन को जीते हैं बनकर राही,
रक्त को बना लेते हैं लिखने की स्याही।
फिर तो केवल विजय सामने आती है,
गाथायें उनकी ये दुनिया गाती है।।

के के सिंह तोमर

मनन

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो, उठो जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।

स्वामी विवेकानंद

आज मैं बारिश से मिला

भादों के आखिरी दिन
आज मैं बारिश से मिला
वो बारिश जो मुझसे खफा
मेरे छत को भिगोती न थी
बादल जाते उड़ जाते बिन बरसे
चले जाते परदेस
परदेस नहीं बस जरा हटकर
बरस जाते पड़ोस में
उमड़ घुमड़ गरजकर, ललचाकर
आज जब घर से निकल
ढलते सूरज से दूर
चला था मैं ताड़ों के झुरमुट की ओर
आँवले की बगिया के पास
भादों के आखिरी दिन
सजनी के दुपट्टे की सी हल्की फुहार
मुझे ओढ़ा गयी
मैं बारिश से मिला
आज भादों का आखिरी दिन....

डॉ.अंजना पोद्दार
परियोजना वैज्ञानिक

पुनर्जन्म

एक बड़ा नक्शा फैलाये
मेरी तरफ अंगुली उठाये
वो आपस में कुछ गुपचुप कर रहे थे
मुझे और मेरे संग खड़े पेड़ों को
घूर-घूर कर देख रहे थे

थर-थर, डर से मैं काँप रहा था
बगल में खड़ा पेड़
मेरे डर को भाँप रहा था
अभी-अभी तो कत्लेआम हुआ था
काट डाले पेड़ थे सारे, उधर
कंक्रीट उगाने का इंतज़ाम हुआ था
क्या यहाँ भी अब कत्लेआम होगा?
उजड़ जाएगी पेड़ों की बस्ती और
आदमी के रहने का इंतजाम होगा?

उनके जाने के बाद मैं परेशान था
मेरे कुछ दोस्तों के साथ
मुझ पर भी लाल निशान था
दिन की भूख
रातों की नींद गायब हो गयी
अब चलेंगे आरे
और बहेगा लहू
क्यों हमारी जिंदगी
यूँ अचानक छोटी हो गयी?

फिर कज़ा का दिन आ ही गया
किस-किस की चढ़ेगी बलि
साहब, ठेकेदार को गिना ही गया
लेकिन आज कुछ नया हो रहा था
आदमी कुछ ज्यादा लालची लग रहा था

आरे से न काट,
जड़ से खोद रहा था
जड़ सहित मेरे दोस्तों को
एक-एक कर खींच रहा था
आरा नहीं, आज बुलडोजर चल गया
मेरा पूरा कुनबा जड़ से उखड़ गया
एक एक कर बुलडोजर उन्हें ले जाने लगा,
पता नहीं कहाँ जाकर दफनाने लगा

अंत में मेरी भी बारी आई
ठेकेदार ने जड़ से करी खुदाई
कैसा लालची हो गया है इंसान
जड़ सहित उखाड़ेगा
मिटा देगा नामो-निशान
पर ये क्या?
वो जड़ में मिट्टी लपेट रहा है
शायद जिस्म से मेरे बहुत लहू बह रहा है

आईआईटी कानपुर में पेड़ का प्रत्यारोपण होता हुआ

प्रोफेसर भारत लोहनी

मुझे भी जकड़ कर बुलडोजर ने उठाया
थोड़ी सी बची थी जान
मैं डर से थर्राया
लटका कर हवा में मुझे
बुलडोजर लगा सड़क नापने
कौतूहल से देख रहे थे बच्चे
मैं लगा थर-थर कांपने
घिसट-घिसट मेरे अंग छिल गए
टूटे पत्ते, हुआ अधमरा
मेरे होश उड़ गए

जब होश आया
खुद को बैशाखी पे पाया
एक गढ्ढ़े में मुझे रोपा गया था
घर से बेदखल
पराये घर सौंपा गया था
न काटा, न तोड़ा, न जलाया गया था
क्या हो गया आदमी को?
जो मुझे बचाया गया था?
मेरे दोस्त भी सारे
यहीं रोपे गए थे
डर अब भी था उनके चेहरे पर
पर थोड़ा-थोड़ा खुश भी हो रहे थे

हाँ,
यहाँ न मिट्टी, न पानी
न हवा ही अपनी
अब भी याद आती है वो पुरानी बस्ती
पर मिट्टी तो मिट्टी है उसने दिया खूब दुलार
पानी भी बरसा झमाझम कर प्यार से सराबोर
और हवा ने भी यहाँ दी खूब झप्पी
भूल दर्द जिस्म का
हमनें भी पकड़ ली
जोर से मिट्टी

अब हम पर
नई कोपलें आ गई हैं
नई बस्ती अब हमें भा गई है
हाँ, एक ख्याल लेकिन मन को
कोच रहा है
ऐसा क्या हो गया, कि
इंसान अब अच्छा सोच रहा है?

सुनते हैं
उसे पता चल गया है
हम न रहेंगे
तो वो भी खत्म हो गया है
हमारा पुनर्जन्म
उसका प्यार नहीं है
उसके खुदगर्जी
की जीती-जागती मिसाल है

लुप्तता की ओर बढ़ता जल का खजाना

दो बज गये हैं क्या? मैंने आँखे मलते हुए सामने वाली सीट पर लेटे अपने पिता जी से पूछा। उन्होंने घड़ी देखकर कहा, "बस टाइम हो गया है, कानपुर स्टेशन आने ही वाला है, उतरने की तैयारी करो।" स्टेशन पर हम सामान और नींद के आगोश में गुम अपनी 3 साल की बेटी को लेकर नीचे उतर गए। मेरे पति जो कि आई आई टी से एक कोर्स कर रहे हैं, मुझे लेने आये थे। वह हमें लेकर घर के लिए निकल गये वहीं मेरे पिता किसी कार्यवश दूसरी ट्रेन से इलाहाबाद चले गए। सुनसान, अंधेरे रास्तों को पार कर जब हम आईआईटी गेट से अंदर घुसे तो मैं रोमांचित हो उठी। अपने भाई से इस जगह के बारे में बहुत सुना था और अब अनुभव करने का समय था। घर पहुँचते ही मैंने पूरे घर का मुआयना किया फिर अपने पति से कहा, "मैं आकर बहुत खुश हूँ।" भोर के 4 बजे जो मेरी आँख बंद हुई तो सुबह वो किसी खटपट की आवाज पर ही खुली। उनींदी आँखों से मैंने देखा तो सामने छोटे कद की एक दुबली-पतली मगर हँसमुख महिला खड़ी है। मैं उठकर बैठने लगी तो वह बोली, नमस्ते दीदी! मैं आपके यहाँ काम करूँगी, "क्या इस कमरे की सफाई कर लूँ?" मैंने अनुमति में सिर हिलाया तो वह अपने काम में लग गई। उस वक्त उससे कुछ पूछने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। वह भी चुपचाप अपना काम करती रही लेकिन हम दोनों की आँखे एक-दूसरे को तौल रही थीं।

मैं किचन में चाय बनाने पहुँची तब वह बर्तन साफ कर रही थी। मैंने बातचीत के उद्देश्य से उससे पूछा, हाँ! तो क्या नाम बताया तुमने? दीदी, काजल नाम है हमारा "उसका फिल्मी नाम सुनकर मेरे चेहरे पर एक हल्की सी हंसी खेल गयी।" अच्छा, और कहाँ काम करती हो? उसने जल्दी-जल्दी 3-4 घर गिना दिये।" फिर बड़ी बेबाकी से बोली, दीदी! "आप बहुत भाग्यशाली हैं जो आपके यहाँ हम काम कर रहे हैं। ऐसा काम करेंगे कि दिल खुश हो जायेगा।" एक पल के लिए मैं सोच में पड़ गयी, क्या मैं सच में भाग्यशाली हूँ?

बहरहाल 3-4 दिन तक उसका काम देखकर मैं उसकी बात पर भरोसा करने लग गयी क्योंकि पिछला अनुभव बिल्कुल भी अच्छा नहीं था।

वह रोज समय पर आ जाती और बड़ी तल्लीनता से अपना

काम करती, कभी-कभी फिल्मी गाने वाली ट्यून उसके फोन पर बजती तो हंसी आ जाती कि क्या सच में में ये गाने भी किसी फिल्म में हैं। खैर वैसे तो उसकी हर बात अच्छी थी पर उसकी एक कमी थी जो हर अच्छाई पर भारी पड़ती थी और वो थी उसका बेवजह पानी नष्ट करना। उसके बर्तन साफ करने का तरीका मुझे कतई पसंद नहीं था। वह नल को तेज धार में खोलकर छोड़ देती और आराम से बर्तन मांजती रहती। इस प्रकार नल से सारे का सारा अनावश्यक पानी बहता रहता। मैंने 3-4 दिन तो देखा फिर मुझसे रहा नहीं गया क्योंकि बचपन में अगर हम इस तरह पानी बहाकर उसे नष्ट करते तो हमारी माँ हमें पानी नष्ट करने पर बहुत डांटा करती थीं, वे कहतीं, पानी बेहद कीमती है उसे नष्ट मत करो। उनकी ये सीख जैसे हम तीनों भाई-बहनों ने अक्षरशः याद कर ली थी। तभी से पानी को व्यर्थ बहते देखते तो मन में कुछ अजीब सा लगने लगता था।

अभी मामला नया-नया था, इसलिए मैंने प्यार से उससे कहा, देखो काजल! पहले बर्तन माँज लिया करो फिर नल खोलकर इकट्ठे धोया करो, यूँ नल खोलकर कितना पानी बरबाद जाता है। मेरी बात सुनते ही उसने नल तुरंत बंद कर दिया। मुझे लगा बड़ी समझदार है, एक बार में ही समझ गयी। 2 दिन बाद मैं किसी काम से किचन में गयी तब वह बर्तन साफ कर रही थी लेकिन अपने उसी पुराने ढ़र्रे पर। यह देखकर मुझे देखकर गुस्सा आ गया। मैंने उससे तेज आवाज में कहा, "काजल! तुम फिर पानी बरबाद कर रही हो, तुम्हें पता है कि पानी कितना कीमती है? किसी दिन तुम्हें बिना पानी के रहना पड़ा तब समझ में आयेगा।" मेरी बात सुनकर वह बड़े बेपरवाह अंदाज में बोली, "अरे दीदी! ये कानपुर है। यहाँ पानी की कभी कमी कभी नहीं होगी। तुम चिंता ना करो।" उसकी बात सुनकर मेरा गुस्सा और बढ़ गया, क्या ये जिंदगी भर यहीं रहेगी? अगर कभी दिल्ली जैसी जगह में रहना पड़ा तब समझेगी कि पानी कितनी मुश्किल से मिलता है.. जब थोड़े पानी में

गुजारा करना पड़ेगा तब अक्ल ठिकाने लगेगी।
वह भी कहाँ हार मानने वाली थी तपाक से बोली, "अरे दीदी! हम कहाँ जाएंगे, हमारे प्राण तो यहीं कानपुर में निकलेंगे। तुम भी पानी-वानी की चिंता छोड़ दो। जब तक यहाँ रहूँगी, खूब पानी मिलेगा।" सुनकर मेरा खून खौल उठा। मैंने तुरंत उसे चेतावनी दी, "अगर मेरे यहाँ काम करना है तो मेरे तरीके से करो वरना नहीं।" मेरी ये बात उसे शायद जल्द समझ आ गयी और उसने नल तुरंत बंद कर दिया। मैं बड़बड़ाते हुए किचन से निकली कि पानी का भी मीटर लगना जरूरी है, तभी यहाँ लोग सुधरेंगे। मेरे पति मुझे देखकर मुस्कुराने लगे फिर बोले "बड़बड़ाने से कुछ नहीं होगा, सोच बदलने की जरूरत है उसी की कोशिश करो।" मैंने कहा, मैं अकेले क्या कर सकती हूँ यहाँ तो पूरा सिस्टम ही खराब है? "सिस्टम लोगों से ही तो बनता है, यहाँ हमारे ब्लॉक में 12 घर हैं उन सभी से बात करो, अपनी बात समझाओ। कम से कम अपने ब्लॉक में तो हम पानी नष्ट होने से बचा सकते हैं।" मेरे पति ने तर्क दिया मैं उनकी बात से मैं सहमत थी। पर जानती थी कि सब लोग मशाल को दियासलाई तो दिखा सकते हैं पर उसे लेकर कोई आगे नहीं बढ़ना नहीं चाहता।

पारुल पाण्डेय, परिसरवासी

संसार में हित करने वाले कम हैं...

तुलसी जग जीवन अहित कतहुँ कोउ हित जानि।
सोषक भानु कृसानु महि पवन एक घन दानि।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि संसार में जीवों का अहित करने वाले असंख्य हैं, परंतु हित करने वाला कोई एकाध ही होता है। जैसे सूर्य, अग्नि, पृथ्वी, पवन-सभी जल को सुखाने वाले हैं, लेकिन देने वाला केवल एक मेघ है।

अनंत यात्रा

जीवन अनंत यात्रा, जिसका कोई अंत नहीं।
जन्म से लेकर मृत्यु तक, सब एक रहस्य
एक काल्पनिक लक्ष्य, जिसके पीछे भागता हर कोई
एक अंकुर से फूटा तना, और निरंतर होता विकास

कुछ दब जाते सर्द ओलों, बारिश की धार और सूर्य की मार से।
कुछ लड़ते, गिरते, उठते, संभलते, अपना अस्तित्व बचाते
अस्तित्व बचाने का संघर्ष जीवन के सत्य का बोध कराता।
उसी यात्रा का जिसके लिए हम जन्मे, और हमनें प्रयास किया
कई बार हारे, कभी जीते भी।
यात्रा का उद्देश्य अजान, सूक्ष्म, बिल्कुल अलग
कुछ का कर्म महान, कुछ का सुख सम्मान
सब की सोच अलग, राह अलग, चलने का सलीका भी
किन्तु गंतव्य एक उसी शून्य में समा जाना,
जहाँ से आरम्भ हुआ था।
इस जीवन की, जिज्ञासा की, सोच की
आदि से अंत तक एक मनोरम आनंद।
और अंत के उस पार एक नया अध्याय
सब है इस यात्रा में, सुख की शीतलता, दुखों का आवेग,
मोह का जाल, प्रेम का मर्म
सब कुछ जो बांधे इस जीवन को उस यात्रा से।

सीमा यादव
कनिष्ठ सहायक

मत परिवर्तन

मेरा भारत महान, इन तीन शब्दों को देखते - सुनते ही अधिकांश भारतीयों की भांति मेरे चेहेरे पर भी विरक्तिपूर्ण मुस्कान आ जाती थी। एक दिन चाय अवकाश के समय मेरी प्रयोगशाला (कार्य स्थल) के कुछ शोधकर्ता छात्र, आपस में वाद-विवाद कर रहे थे। एक विकसित देश (नाम लिखना हमारी सभ्यता के विपरीत होगा) के छात्र ने कटाक्ष किया, भारत में बहुत अराजकता है। उत्तर में हमारे भारतीय छात्र ने कहा कि उनके देश की सुरक्षा में जो धन व्यय करते हैं यदि उसे घटाकर भारत के सुरक्षा व्यय के बराबर कर दिया जाये तो उनके देश की स्थिति इससे भयावह होगी। इतनी सुरक्षा के बाद भी जहां बच्चे विद्यालयों में गोलियों से अपने ही साथियों को मारते हैं, जहाँ आम नागरिकों को नस्लभेद के कारण खुले आम मार दिया जाता है और नारियों का निरादर होता है, उससे तो मेरा देश कहीं ज्यादा अच्छा है। इस घटना ने मुझे अपने देश को और अच्छे से जानने के लिये प्रेरित किया। कुछ खोज, पढाई एवं शोध के बाद मैंने पाया कि ऐसे सैकड़ों कारण हैं जो हमारे देश को न सिर्फ महान बनाते हैं बल्कि हमें इस पर गर्व करने का भी अवसर देते हैं। ऐसे मुख्य कारणों का मैं यहाँ बिंदुवार उल्लेख कर रहा हूँ

1. नाम: सर्वविदित है कि हमारे देश को एक नहीं बल्कि तीन नामों से जाना जाता है। हिन्दी भाषी इसे भारत कहते हैं तो अंग्रेजी में उसी को इंडिया एवं उर्दू में हिन्दुस्तान कहा गया। क्या यह उस आजादी, प्रेम एवं सौहार्द का प्रतीक नहीं जो हमें इस देश में मिला। ये कदाचित् उसी का फल है कि लोगों ने इस देश को मात्र मिट्टी का टुकड़ा ना मानकर अपना माना और उसी भाँति इसका नाम रखा जैसे कोई प्रेम वश अपने किसी मित्र का नाम रख देता है।

2. भाषा : भारत एक बहुभाषी देश है, यहाँ 1600 से भी अधिक बोलियां एवं 22 राजभाषाएं हैं जिसमें हिन्दी संघ की राजभाषा है। भाषा की विविधता इससे भी पता चलती है कि हमारे देश के हर राज्य में एक से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने देश में हजारों भाषाओं का प्रयोग होता है फिर भी हमारी एकता और अखंडता में कोई अड़चन नहीं है अपितु हम पूर्ण हृदय से दूसरी भाषाओं को भी सीखते हैं। यहाँ की प्रचलित कहावत है कि 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस में बानी' अर्थात् विश्व में सर्वाधिक संख्या में भाषा का प्रयोग हमारे देश में ही होता है।

3. धर्म : भारत एक पंथनिरपेक्ष देश है। पंथनिरपेक्षता का अर्थ है कि यहाँ ना तो देश के संचालन में धर्म का हस्तक्षेप

होगा और न किसी धर्म विशेष के लिये नियम-कानून भिन्न होंगे। सरल शब्दों में कहा जाये तो सभी को अपने धर्म या पंथ को अपने विधि अनुसार मानने की पूर्ण स्वतंत्रता है। इसलिए विश्व के सभी धर्मों के अनुयायी यहाँ ना सिर्फ स्वतंत्रतापूर्वक रहते हैं बल्कि भारतवर्ष में अपने-अपने पर्व एवं त्योहार बिना किसी विघ्न के हर्ष पूर्वक मनाते हैं। इसी कारण इस देश में लगभग सभी धर्मों के पूजास्थल भी हैं जैसे मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारे आदि। परन्तु ध्यान देने और सराहने योग्य बात तो यह है कि इतनी साम्प्रदायिक विविधता होने पर भी मान्यता यह है कि 'हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब भाई भाई' हैं। इतना ही नहीं इस देश में ऐसे कई मंदिर है जिसकी देखभाल मुस्लिम लोग पूरी श्रद्धा से करते हैं। यहाँ हर मज़ार पर आपको हिंदू धर्म के अनुयायी नमन करते हुए मिलेंगे। यह हमारी ही विशेषता है कि हमने न केवल अपने बल्कि प्रत्येक धर्म को समान सदभाव एवं श्रद्धा से स्वीकार किया है। ऐसा है हमारा देश भारत। तो फिर इस देश में धर्म के नाम पर उपद्रव क्यों? आखिर मानव भी तो एक प्राणी हैं, जिसमें अन्य प्राणियों की तरह लोभ, भय, क्रोध आदि पशुता के गुण प्राकृतिक रूप से विद्यमान हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि हम मनुष्यों ने अपनी इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रखना सीखा है। इसीलिए प्राणी जगत में मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी का गौरव प्राप्त है। तथापि कई बार कुछ लोग अपने स्वार्थवश लोगों की धार्मिक भावनाओं को निशाना बना कर देश में साम्प्रदायिक असहिष्णुता फेलाने जैसे निन्दनीय कृत्य करते हैं। किन्तु इसके बावजूद हमारी सशक्त मूल सामाजिक अवधारणा वातावरण को अतिशीघ्र सामान्य कर देती है।

4. त्योहार : इस देश में इतने त्योहार मनाये जाते हैं कि क्या साल, क्या महीने, सप्ताह-सभी कम पड़ जाते हैं। कई लोगों को लग सकता है कि त्योहार ईश्वर की पूजा मात्र है परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। त्योहार तो अपनी खुशी को दूसरों के साथ साझा करके उन्हें दुगुना करने का, समाज में प्रेम और सौहार्द्र बढ़ाने का मात्र एक उपाय है। हमारे देश में त्योहार महज किसी आराध्य ईश्वर के जन्मदिवस मनाने के लिए नहीं वरन् फसल के पकने, नव वर्ष के आगमन एवं अन्यान्य कारणों से मनाया जाता है। इन्हें मनाते वक्त हम केवल अपने धर्म से जुड़े त्योहारों तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि दूसरों के त्योहारों में भी परस्पर खुशियां मनाते हैं तथा उनमें समान उत्साह और श्रद्धा से सम्मिलित होते हैं। त्योहार के दिन हम अपने अभिभावकों और गुरुजनों को नमन करते हैं और उनसे आशीष प्राप्त करते हैं। परिवार के सभी सदस्य इस अवसर पर एक दूसरे से मिलने की हर सम्भव चेष्टा करते हैं। मौसम परिवर्तन और नई फसलों की खुशी एवं उसकी सफलता में सभी को सम्मलित करने की यह एक उत्तम व्यवस्था है-त्योहार। प्रत्येक नर-नारी अपने परिवार के लिए, जो अथक परिश्रम करता है, त्योहार उन्हें अपने तन व मन को आराम व शान्ति प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम होता है । हम रोज़ा एवं उपवास रखते हैं तो पहले हम जरूरतमंदों को भोजन और फल दान करते हैं तथा उसके बाद ही हम रोज़ा व उपवास को खोलते हैं। हमीद का ईदगाह से अपनी माँ के लिए, उनके जलते हाथों की सुरक्षा हेतु, चिमटा लाने जैसा सुन्दर विचार हमारे त्योहारों की ही देन है जिसकी पश्चिमी देश खिल्ली उड़ाते हैं। सरकार ने अपनी नई नीति के अनुरूप छुट्टियाँ घटा करके साप्ताहिक कार्य-अवधि पाँच दिन की कर दी है। इससे कर्मचारियों को छुट्टियाँ तो अधिक मिलने लग गई परन्तु त्योहारों के दिन या तो उन्हें छुट्टी लेनी पड़ती है या फिर बेमन से काम करना पड़ता हैं, जिससे काम की गुणवत्ता में कुछ न कुछ कमी आ जाती है। कैसी विडम्बना है कि हमारे त्यौहारों के महत्व को न समझनेवाले पश्चिमी देश, आज नाना प्रकार के डे (मदर, फादर, सिस्टर आदि) मनाने को विवश हैं।

5. स्वच्छता : हमारे पूर्वज स्वच्छता के प्रति अत्यन्त जागरूक थे। वे भोजन-पानी के लिए प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं जैसे पेड़ के पत्तों, मिट्टी के बर्तनों का ही प्रयोग करते थे ताकि प्रयोग के बाद इन वस्तुओं को नदी, तलाब व भूमि में कहीं भी विसर्जित कर सकें। इस प्रकार प्रकृति को हानि नहीं पहुँचाते थे और उन्हीं में ये वस्तुयें कुछ समय बाद गलकर मिल जाती थी। फर्श व दीवालों पर गेरु व गोबर का लेप लगाते थे जिससे मकान कीड़े-मकोडों से मुक्त रहते थे। पीपल, बरगद व फलदार पेड़ों की पूजा करते थे व अन्य लोगों को भी प्रेरित करते थे, ताकि लोग पेड़ न काटें और ईधन एवं अन्य कार्यों के लिए केवल टहनियों, उनकी शाखाओं तथा सूखी पत्तियों का प्रयोग करें। इनके फलस्वरूप वातावरण में शुद्धता रहती थी। पूजा-पाठ, प्रार्थना या नमाज़ आदि से पूर्व अपने शरीर व आराधना-स्थल को साफ रखने का प्रचलन स्थापित किया, जिससे लोगों को स्वत: स्वच्छता की सीख मिलती थी। वैष्णो देवी या स्वर्ण मंदिर पर जो सफाई व सुन्दरता है उसका कारण है, भक्त जनों का परिसर में फूल व मिष्ठान जैसे प्रसाद को लेकर जाना का वर्जित होना। आदि समय में भी यही प्रथा थी पर कुछ स्वार्थी लोगों ने इसे जाति विशेष से जोड़कर इस प्रथा के सही रूप को ही नष्ट कर दिया, जिसके प्रतिफल में हम आज तमाम धार्मिक स्थलों को अस्वच्छ पाते हैं। सार्वजनिक पूजा की मूर्तियों को मिट्टी, फूस व प्राकृतिक रंग से तैयार किया जाता था और पूजा के पश्चात इन मूर्तियों को नदी या तलाबों में विसर्जित करते थे। इस प्रकार वो मिट्टी व रंग पानी को विषाक्त किए बिना उसमें घुल जाते थे। आधुनिक युग में अब हम रसायनिक पदार्थों का प्रयोग करते हैं जो पानी को न केवल विषाक्त करते हैं अपितु जलचरों को हानि भी पहुँचाते हैं।

6. नारी सम्मान : सभी देवी-देवताओं में, शक्ति के लिए हम माँ दुर्गा को, धन के लिए माँ लक्ष्मी को और विद्या के लिए माँ सरस्वती को पूजते हैं। हर वर्ष नवरात्रि के दिनों में हम कन्या-पूजन करते हैं क्योंकि हमारी मान्यताओं में कन्यादान को सर्वश्रेष्ठ दान माना जाता है। हम सच्चे हृदय से अपने से अधिक उम्र की महिलाओं को माता, हम-उम्र को बहनजी और छोटी बच्ची को बेटी कहकर सम्बोधित करते हैं क्योंकि नैसर्गिक रूप से हम भारतीय नारी के लिये सम्मान का भाव रखते हैं। इसके बाद भी हम आज लगभग हर दिन नारी उत्पीड़न की बातें पढ़ते और सुनते हैं। जिसका एक प्रमुख कारण मदिरा सेवन है जो मनुष्य की मति को भ्रमित कर देता है। अन्य बड़ा कारण है हमारी सार्मथ्य (धन, बाहुबल आदि) जो रह-रह कर हमें भ्रष्ट करता है। स्पष्टत: 'समरथ को नहि दोस गोसाईं', तुलसीदासजी की इस पंक्ति का अर्थ अधिकांश सार्मथ्यवान पुरुषों ने भिन्न प्रकार से निकाल लिया है और कुछ भी कर सकने की सोच में बदल डाला है।

यह सर्वदा निन्दनीय है।

7. शिक्षा : हमारी शिक्षा प्रणाली आरम्भ से ही सशक्त रही है। नालन्दा व तक्षशिला की गणना सदैव सर्वश्रेठ विश्वविद्यालयों में होती रही है। आज विश्व के सभी देशों में भारत से शिक्षा प्राप्त भारतीय वैज्ञानिक एवं चिकित्सक कार्यरत हैं। व्याहारिक शिक्षा तो हमें अपने घर के बड़े-बुजुर्गों से सदैव प्राप्त होती ही रही है। हमें विद्यालयों में मात्र किताबी ज्ञान नहीं अपितु मानवता और सामाजिकता का ज्ञान भी दिया जाता है। हमारी शिक्षा-पद्धति ऐसी रही है जिसमें गुरू के सम्मान में गुरुदक्षिणा स्वरूप अंगूठा अर्पित करने में क्षणमात्र की भी दुविधा नहीं होती।

ऐसे ही अनेक और बिंदु है, जिसकी व्याख्या की जाए तो भारत की महानता पर ग्रंथ लिखे जा सकते हैं लेकिन आधुनिक भारत की मूल समस्या यह है कि हम विदेशों की ऊपरी और लुभावनी बातों को अपना रहे हैं पर हृदय से अपनी भारतीय संस्कृति को छोड़ नहीं पा रहे।

आशा है अब आप सब का भी मत परिवर्तित होगा और आप अपने अंत: करण से मानेंगे 'मेरा भारत महान'।

उदय मजूमदार
तकनीकी अधीक्षक

विपत्ति काल के मित्र कौन हैं

तुलसी असमय के सखा धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यब्रत राम भरोसो एक।।

विपत्ति के मित्रों का परिचय देते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि धैर्य, धर्म, विवेक, साहस, सत्य-व्रत और भगवान राम का भरोसा-विपत्ति से घिरे मनुष्य के यही परम मित्र हैं। इनके द्वारा वह बड़े से बड़े कष्ट को सहज सहन कर लेता है।

जिंदगी–मौत का वार्तालाप

एक दिन मौत ने जिंदगी के दरवाज़े पे दस्तक दी
और कहा कि मैं तो तुझे लेने आयी हूँ।
जिंदगी ने जबाब दिया कि मुझे ले जाएगी तो पछताएगी
क्यूं कि हूँ तो मैं इंसानो के लिए
पर मैं इंसानो को ही समझ न आयी हूँ ।

मौत ने पूछा जिंदगी से कि ये क्या है मसला?
तू तो इंसानो को बड़ा सताती है
पर मैं जब तुझे लेने आती हूँ
न जाने क्यों इंसान घबराते हैं ।
कभी तूने किसी को इतना प्यार जताया है
तो कभी उसी को जहर का जाम पिलाया है।
कभी तेरी मोहब्बत ने किसी को संवारा है
तो कभी तेरी बेवफाई ने उसी को रुलाया है ।
मैं तो इंसानो पर तेरा ये कहर देख नहीं पाती हूँ
इसीलिये तुझे अपनाने आ ही जाती हूँ ।
सोचती हूँ, इंसानो का दुःख अपना बना लेती हूँ
पर मैं तो हमेशा बदनाम ही होती हूँ ।

इस पर जिंदगी ने भी अपना एहसास जताया
और बड़ी नाराज़गी से, मौत को बताया ।
मैं ऐसी ही हूँ, इस बात से इंसान अनजान तो नहीं
पर मुझे अपनाने में किसी को ऐतराज़ भी नहीं ।
दिखाती हूँ लोगो को इसीलिए गम का मयखाना
वो भी तो समझ पायें जब हाथ में आये खुशी का पैमाना ।
पर इंसान मुझे भी गलत समझ लेते हैं
और कैसे-कैसे मुझे बदनाम कर देते हैं ।
इसीलिए मैं भी हो जाती हूँ खफा
और निकल पड़ती हूँ तेरे साथ ही पूरा करने
अपने सफर का अगला फलसफा...
अपने सफर का अगला फलसफा...
अपने सफर का अगला फलसफा...

बिक्रमजित शर्मा
छात्र

छायाचित्र

छायाचित्र

स्वतंत्रता दिवस की
पूर्व संध्या

राष्ट्र निर्माण : देशीय भाषा बनाम अंगरेजी

चीन के प्रवास के दौरान मैं सपरिवार बीजिंग के हाई-एन्ड रेस्तरॉ में पहुंचा। वहाँ पहुँचने पर हमने देखा कि रेस्तरॉ के स्वागत कक्ष के विशालकाय एल.सी.डी. में चीनी भाषा में कुछ डिस्प्ले हो रहा था। हम लोग रेस्तरॉ की एक टेबल पर बैठ गए। कुछ समय बाद लाल रंग की स्कर्ट पहने हुए एक खूबसूरत महिला वेटर हमारे पास आई और बड़ी विनम्रता से हम लोगों से चीनी भाषा में बात करने लगी। वहाँ हमने देखा कि हर कोई चाहे वह युवा वेटर-स्टॉफ रहा हो या वहाँ का मैनेजर, चीनी भाषा में बात कर रहा था, मतलब वहाँ अंगरेजी का बोल-बाला नहीं था। हम लोग शाकाहारी भोजन करने के मूड में थे और मेरी बेटी पीकिंग डक, एक प्रकार का चीनी व्यंजन जिसके लिए वह रेस्तरॉ प्रसिद्ध है, खाना चाहती थी। हमें यह देखकर बेहद आश्चर्य हुआ कि वहाँ का स्टॉफ एक सामान्य-से डक (Duck) शब्द से परिचित नहीं था। इसके बाद हमारे आग्रह पर महिला वेटर ने अपने आईफोन पर चीनी भाषा में हमारा आर्डर बुक किया और फिर उसने अपने आईफोन के ट्रॉसलेशन एप्स पर क्लिक करके मुझे उसका अंगरेजी अनुवाद दिखाया। इस प्रकार हम लोग अनुवाद का सहारा लेकर बात-चीत करने लगे। हमने रेस्तरॉ से वापस जाने के लिए एक टैक्सी वाले को बुलाया। उसके आने पर हमने उसे अपने गंतव्य का पता दिखाया जो चीनी में लिखा हुआ था। टैक्सी चालक ने झट-पट अपने जीपीएस में उस पते को टाइप किया और मैपिंग एप्स, जिसमें मेंडरिन भाषा में रास्ते की जानकारी दी जा रही थी, के अनुसार वह अपनी टैक्सी को आगे बढ़ाते चला गया।

जैसा कि हमारी चर्चा का विषय भाषा है, तो यहाँ यह बताना समीचीन होगा कि भारत में अधिकतर लोगों की धारणा है कि संपूर्ण उन्नति के लिए अंगरेजी भाषा आवश्यक है। यदि कोई भारतीय भाषाओं की वकालत करता भी है, तो उसकी विचारधारा को संकीर्ण एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रतीक मानकर उसे राष्ट्र की आर्थिक उन्नति के लिए बाधक समझा जाता है। यह सोच भ्रामक है। यहाँ किसी भाषा की आलोचना करना हमारा मंतव्य नहीं है, किन्तु तथ्यों एवं प्रयोगों के आधार पर सच को सामने लाना हमारा उद्देश्य है जो इस परिवर्तनशाली युग में जरूरी भी है। भारत की शिक्षण व्यवस्था में अंगरेजी भाषा को एक मात्र विकल्प के रूप में देखा जाता है। चाहे वह उच्च शिक्षा का क्षेत्र हो या चाहे प्रोफेशनल शिक्षा का क्षेत्र सब जगह अंगरेजी का वर्चस्व है। किन्तु वास्तविकता यह है कि भारत की आर्थिक अवनति के कई कारकों में से अंगरेजी भाषा भी एक कारक है। अंगरेजी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग किए जाने से बहुत बड़ी संख्या में भारत के लोग आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। हम तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि अंगरेजी ने भारत की अधिकांश जनसंख्या को निर्धनता की ओर धकेल दिया है।

एक बार माइक्रोसॉफ्ट कंपनी में मैनेजर के पद पर रहते हुए मुझे हैफा (इजराइल) जाने के अवसर मिला। मुझे वहाँ यह देखकर हैरानी हुई कि माइक्रोसॉफ्ट जैसी मल्टीनेशनल कंपनी में सभी लिखित एवं मौखिक कार्य हिब्रू भाषा (इजराइल देश की भाषा) में हो रहे हैं। कंप्यूटर में सभी काम जैसे पावर पॉइन्ट प्रेजेन्टेशन, ई-मेल, टेक्निकल डिस्कशन आदि हिब्रू में किए जा रहे हैं। मुझे यह भी पता चला कि इजराइल के प्रतिष्ठित टेकनिएन इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय तथा वहाँ के अन्य उच्च शैक्षिक संस्थानों में पठन-पाठन भी हिब्रू भाषा में हो रहा है। उल्लेख्य है कि टेकनिएन विश्वविद्यालय विश्व के शीर्षस्थ प्रौद्योगिकी संस्थानों में से एक है और जिसे हमारे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की तुलना में उच्च स्थान प्राप्त है। भारत में इजराइल के छात्रों द्वारा बनाई गई उन्नत तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। गौरतलब है कि इजराइल के अधिकतर इंजीनियरों ने अपनी भाषा याने हिब्रू में पढ़ाई की है। इजराइल का सॉफ्टवेयर उद्योग भारत के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम है, जबकि वहाँ की पूरी जनसंख्या दिल्ली की जनसंख्या से भी कम है। दूसरी तरफ हम अपनी उन्नति के लिए अंगरेजी पर निर्भर हैं।

मैंने अब तक पच्चीस देशों की यात्रा की है और मेरी इन यात्राओं का उद्देश्य यह जानना रहा है कि इन देशों के निवासी किन-किन भाषाओं का प्रयोग करते हैं। इन देशों के भाषायी अध्ययन से मुझे ज्ञात हुआ कि विकसित एवम् विकासशील देशों की श्रेणी में आने वाले देशों के लोग देशज भाषा का ही प्रयोग करते हैं। यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के दौरान यह बात

सामने आई थी कि उच्च शिक्षा के लिए लैटिन भाषा के स्थान पर जैसे ही वहाँ की मातृभाषाओं जैसे अंगरेजी, जर्मन एवं फ्रेन्च को माध्यम बनाया गया था, वैसे ही वहाँ के लोगों में शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ने लगा था और वे धीरे-धीरे समृद्ध होने लगे थे। कहने का आशय है कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अंगरेजी के प्रति आश्रितता चाहे वह पेशेवर कार्य के लिए हो या चाहे शैक्षणिक कार्य के लिए, देश के विकास में बाधक है तथा असमानता एवं सामाजिक भेदभाव उत्पन्न करने वाली है।

एक बार मेरी मुलाकात गुड़गाँव में चार्टड एकाउन्टेंट के पद पर काम करने वाले श्री प्रदीप डांग से हुई थी। मुलाकात के दौरान श्री डांग ने मुझे अपने सी.ए. बनने की कहानी बताई। उन्होंने बताया कि वे ग्रामीण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखते हैं और आरंभ से ही गणित विषय में अच्छे रहे हैं। आगे उन्होंने बताया कि विद्यालयी स्तर पर उन्होंने थोड़ी बहुत अंगरेजी पढ़ी थी, इसलिए वे अंगरेजी पढ़ने-लिखने में थोड़े तंग थे। सी.ए. की परीक्षा का माध्यम अंगरेजी था और सभी लेखा नियम अंगरेजी में दिये गये थे। उन्होंने येन-केन-प्रकारेण परीक्षा तो पास कर ली किन्तु उन्हें अंगरेजी माध्यम के छात्रों की तुलना में दोहरा परिश्रम करना पड़ा था। वहीं उनके मित्र सी.ए. प्रवेश परीक्षा देने का साहस नहीं जुटा पाये क्योंकि वे ग्रामीण पृष्ठभूमि के थे और उन्हें अंगरेजी नहीं आती थी। उनका दुर्भाग्य था कि वे आज कहीं पर किसी के नौकर या ड्राइवर के रूप में काम कर रहे हैं। इस दौरान प्रदीप ने मुझे एक ग्रामीण व्यवसायी की भी बात बताई जो उनके पास अपनी कंपनी का पंजीकरण कराने आया था। ग्रामीण व्यवसायी ने अपने गाँव में एक कंपनी खोल रखी थी और उसे अपनी कंपनी से लगभग 10 करोड़ रुपये सालाना टर्नओवर प्राप्त होता था। उस व्यवसायी को कंपनी के पंजीकरण के लिए अंगरेजी में फॉर्म भरना था। अंगरेजी का नाम आते ही वह दुविधा में पड़ गया क्योंकि वह अंगरेजी पढ़ना-लिखना नहीं जानता था। कुल मिलाकर उसे पंजीकरण की समस्त कार्यवाही के लिए अंगरेजी में लिखे अभिलेखों को समझने में काफी कठिनाई हो रही थी। ऐसे स्थिति में उसके पास एक ही विकल्प था कि वह उन अंगरेजी के अभिलेखों के अनुवाद के लिए शपथ-पत्र प्रस्तुत करे। अंततोगत्वा उसने अपनी कंपनी के पंजीकरण के इरादे को त्याग दिया।

अंगरेजी के अंधानुकरण से देश में भाषा के क्षेत्र में भेद-भाव का माहौल दिखाई देता है, चाहे कोई इसे स्वीकार करे या न करे। अंगरेजी के वर्चस्व का चंद लोग फायदा उठा रहे हैं। कथित अंगरेजी प्रेमियों जिसमें नौकरशाह एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाले प्रबंधक भी शामिल हैं, की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। वे अंगरेजी के हसीन सपनों के साथ जी रहे हैं या जीने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी भाषायी व्यवस्था में अंगरेजी का स्थान सर्वोपरि है और वहीं दूसरी ओर सभी भारतीय भाषाएँ अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं। उदाहरण के लिए यदि आपका कोई केस निचली अदालत में लगा हुआ है, तो आप अपने केस की कार्रवाई में हिन्दी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं, वहीं यदि आपको उच्च अथवा सर्वोच्च न्यायालय में अपील करना है तो आपको अंगरेजी का सहारा लेना पड़ता है। यह बेहद आश्चर्य की बात है कि हमारे देश में न्यायिक प्रक्रिया के दौरान कोर्ट का निर्णय उस भाषा में सुनाया जाता है, जिस भाषा को स्वयं मुवक्किल समझ पाने में सक्षम नहीं है। यही बात हमारे प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकी संस्थानों, प्रबंध संस्थानों, अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थानों में भी लागू होती है, जहाँ पठन-पाठन का माध्यम अंगरेजी भाषा है। विडम्बना है कि यदि भारत की सेना में अधिकारी के रूप में भर्ती होना है, तो अंगरेजी में परीक्षा देना अनिवार्य होता है, वहीं यदि उसी सेना में जवान बनना है तो आपको किसी भी भारतीय भाषा का प्रयोग करने की छूट होती है। कहने में कोई गुरेज नहीं कि भले ही अंगरेजों ने इस देश को छोड़ दिया था, किन्तु उनकी भाषा अभी भी देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में रची बसी हुई है।

कुछ वर्ष पूर्व मैंने भाषा पर एक सामाजिक प्रयोग करने का निश्चय किया। जिसके लिए मैंने कुछ प्रश्नों के सेट तैयार किये थे। मेरा उद्देश्य प्रश्नों के माध्यम से उत्तरदाताओं के बौद्धिक स्तर का पता लगाना था। मैं प्रश्न-पत्रों को लेकर हरियाणा, राजस्थान एवं उत्तराखण्ड के कुछ गाँवों में गया। इसके अलावा यूएसए में भी मैंने प्रश्न-पत्रों का वितरण किया। प्रश्न-पत्र में दिए गए प्रश्न नान-वर्बल प्रकृति के थे और उन्हें हल करने में भाषा के विशेष ज्ञान की जरूरत नहीं थी। मैं हरियाणा के निवाड़ी के निकट खानडोडरा नामक गाँव के बच्चों की बौद्धिक क्षमता देखकर स्तब्ध हो गया। वहाँ परीक्षा देने वाले कुल बच्चों में से 30% बच्चों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए थे। वार्तालाप के दौरान वहाँ के प्राचार्य ने बताया कि अंगरेजी पर आधारित शिक्षा पद्धति के कारण प्रतिभावान बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

वर्तमान में देश में अंगरेजी माध्यम के स्कूलों का जाल फैला हुआ है। आप देख सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी अंगरेजी

माध्यम के स्कूलों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। अंगरेजी भाषा को देश की जरूरत बताया जा रहा है, जो मेरी समझ से बिलकुल अतार्किक है। यह हमारी सरकारी नीतियों का परिणाम यह है कि हमें भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंगरेजी को अधिक महत्व देना पड़ रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, भारतीय प्रबंध संस्थानों तथा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों जैसे देश के सभी शीर्षस्थ संस्थानों में शिक्षण कार्य अंगरेजी में हो रहा है। देश में अंगरेजी माध्यम से अभियांत्रिकीय एवं चिकित्सा की पढ़ाई कराई जा रही है। चार्टर्ड अकाऊन्टेड से संबंधित समस्त नियम एवं कानून अंगरेजी में हैं। भारत के सर्वोच्च न्यायालय तथा कतिपय उच्च न्यायालयों में केवल अंगरेजी में कार्यवाहियाँ होती हैं। इसके विपरित जापान के शीर्षस्थ न्यूरोसर्जनों ने अपनी पढ़ाई जापानी भाषा में की है और बड़ी सहजता एवं विशेषज्ञता से काम कर रहे हैं। इजराइल, रूस, चीन आदि देशों में स्थित शीर्षस्थ शैक्षिक संस्थानों में अपनी भाषा में शिक्षण कार्य हो रहा है। हमारे लिए इससे अधिक प्रेरणादायी बात और क्या हो सकती है कि दक्षिण कोरिया एवं जापान के छात्रों ने अपनी मातृभाषा में ए.बी.ए. की पढ़ाई करके सैमसंग एवं टोयोटो जैसी विश्वविख्यात कंपनियाँ आरंभ की है।

शिक्षा के क्षेत्र में अंगरेजी के वर्चस्व के कारण देश में प्रतिभाओं एवं मानव संसाधनों का ह्रास हो रहा है। उच्च शिक्षा में अंगरेजी की अनिवार्यता को देखते हुए अब प्राथमिक स्तर पर भी अंगरेजी माध्यम स्कूल का महत्व बढ़ चुका है किन्तु ये प्राथमिक स्कूल बेहतर एवं वास्तविक परिणाम नहीं दे पा रहे हैं। एक बार ए.सी.ई.आर ने आन्ध्रप्रदेश के निजी तेलगु माध्यम स्कूल तथा प्राइवेट अंगरेजी माध्यम स्कूल के प्रदर्शन एवं उनके परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन किया था और एक रिपोर्ट तैयार की थी। उनकी रिपोर्ट के अनुसार तेलगु माध्यम स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों में गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों की बहुत अच्छी समझ पायी गई। वहीं दूसरी तरफ अंगरेजी माध्यम के छात्रों में इन विषयों के मौलिक ज्ञान का अभाव पाया गया। भारत से इतर देशों में मातृभाषा पर आधारित शिक्षा से होने वाले लाभ को देखा जा सकता है। इस क्रम में यूनेस्को ने मातृभाषा पर आधारित शिक्षा के लाभों पर दिशा-निर्देश भी जारी किये हैं।

''यह स्वतः सिद्ध है कि किसी बच्चे को उसकी मातृभाषा में शिक्षा देना सर्वोत्तम है हम मनोवैज्ञानिक आधार पर कह सकते हैं कि किसी बच्चे को उसकी मातृभाषा में शिक्षा देना एक सार्थक पहल है, क्योंकि वह बच्चा अपनी मातृभाषा में विषयों को भली-भाँति समझ सकता है तथा किसी भी विषय पर सहजता से अभिव्यक्ति दे सकता है।''

विज्ञान को अपनी मातृभाषा में पढ़ना और उसे समझना आसान होता है, किन्तु भारत में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए अंगरेजी पर निर्भर होना पड़ता है। किन्तु कभी-कभी अंगरेजी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भी इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है। मान लीजिए कि आपने अंगरेजी माध्यम में पढ़ाई की है और आपने साथ में थोड़ी चीनी भाषा भी पढ़ी है। अब आपको चीनी भाषा में आगे की पढ़ाई करने के लिए कहा जाए है, तो निश्चित तौर पर आपको किसी विषय को समझने, पढ़ने एवं लिखने में बहुत कठिनाई होगी। यही भारत देश की वास्तविकता है, जहां अनेकानेक ग्रामीण प्रतिभावान विद्यार्थियों पर जबरदस्ती अंगरेजी थोप दी जाती है।

अंगरेजी के मकड़जाल में फँसकर देश के कई मेधावी छात्र नैराश्य का शिकार हो रहें हैं, आत्महत्या कर रहें हैं। जनजाति एवं कृषक परिवार में जन्में अनिल मीणा मेधावी छात्र था। वह अपने स्कूल का सबसे होशियार बच्चा था और AIIMS जैसे संस्थान में प्रवेश पाने का हकदार था। उसे AIIMS में अंगरेजी माध्यम से पढ़ाई करनी थी और उसने इसके लिए हरसंभव प्रयास भी किया, किन्तु अंततोगत्वा वह लड़ाई हार गया और उसने फांसी लगा ली। आत्महत्या करने वाला वह एकमात्र विद्यार्थी नहीं था। देश भर के शीर्षस्थ संस्थानों में पढ़ने वाले कई ग्रामीण विद्यार्थियों ने उक्त कारण से अपना जीवन समाप्त कर लिया है। इस घटना की पुष्टि के लिए हम अनिल मीणा के एक साथी द्वारा CARAVAN MAGAZINE को दिये गए साक्षात्कार के कुछ अंश पर दृष्टिपात करते हैं।

''राजेंद्र अनिल का मित्र था और वह उसकी परेशानी जानता था। दोनों सरकारी स्कूल से पढ़कर आए थे, जहां उन्होनें हिन्दी माध्यम में पढ़ाई की थीं। AIIMS में शिक्षण का माध्यम अंगरेजी है और वे दोनों बमुश्किल लैक्चर समझ पाते थे। जैसाकि राजेंद्र ने मुझे बताया कि वे दोनों हिन्दी माध्यम में टॉपर थे और वे अपनी पढ़ाई के साथ न्याय नहीं कर पा रहें थे। बकौल राजेन्द्र, AIIMS में पढ़ने वाले ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी अंगरेजी माध्यम में संघर्ष कर रहे हैं, उन्हें शब्दकोश की मदद लेनी पड़ रही है। वे अपने जैसे पृष्ठ भूमि वाले वरिष्ठ

विद्यार्थियों के सहारे पढ़ाई कर रहे हैं।''

जरा सोचिए ! हम अपने बच्चों के साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं ? भारतीय भाषाओं को देश में समुचित स्थान क्यों नहीं मिल पाया है, इस पर विचार करना जरूरी है। यदि हम इसके ऐतिहासिक कारणों की खोज करते हैं तो पाएंगे कि औपनिवेशिक काल से ही हमारी शिक्षण व्यवस्था में अंगरेजी का राज रहा है। मैकाले इसके जन्मदाता कहे जा सकते हैं। सुनियोजित औपनिवेशिक नीतियों के कारण अंगरेजी भाषा लोगों के दिलो-दिमाग में छाई हुई है। इसी क्रम में मैकाले के उस कथन का उल्लेख करना सही होगा जिसमें उन्होंने कहा था कि भारतीय भाषाएँ विज्ञान एवं तकनीकी के शिक्षण की लिए उपयुक्त नहीं हैं, वे तो साहित्य की भाषाएँ हैं।

भारत में ऐसा प्रतीत होता है कि कुलीन वर्ग एवं नीति-निर्माता लोग अभी भी पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं। ये लोग शायद मानते हैं कि भारतीय भाषाओ में विज्ञान की पढ़ाई नहीं की जा सकती है। उनका यह सोचना गलत है क्योंकि विश्व भर में दर्जनों भाषाओं में विज्ञान एवं तकनीकी की पढ़ाई की जा रही है। टर्की, पोलैंड, चेक रिपब्लिक एवं थायलैंड जैसे छोटे देशों में मैंने पाया कि वहाँ के लोग अपनी भाषा में ही विज्ञान एवं तकनीकी की पढ़ाई कर रहें हैं। थाई भाषा ब्राह्मणी लिपि में लिखी जाती है तथा उसमें और अनेक भारतीय भाषाओं में समानता है। थाई भाषा संस्कृत से प्रभावित है तथा इसमें संस्कृत के कई शब्दों का प्रयोग तकनीकी शब्दावली के लिए किया जा रहा है। सी.के.राजू ने अपनी पुस्तक 'Is Science Western advanced technical terminology' में इस बात का जिक्र किया है कि यूरोप ने भारत के विज्ञान एवं गणित के ज्ञान के भंडार से बहुत कुछ ग्रहण किया है। अर्थशास्त्री विराट दिव्यकृति ने इस ओर ध्यान दिलाया है कि अवसंरचनात्मक विकास के साथ-साथ भाषागत ढाँचे का भी विकास होना जरूरी है। आधुनिक युग में भारत की सरकारें भारतीय भाषाओ के विकास में पिछड़ गयी हैं।

यदि हम भारत को विकसित देश बनाना चाहते हैं, तो हमें भारतीय भाषाओं का पोषण एवं उनका विकास करना ही होगा। किसी भी बड़े देश का विकास अपनी स्वदेशी भाषा के आधार पर ही हो सकता है। भारत में भी देशीय भाषाओं के विकास के बिना उसका सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। मैंने प्रति व्यक्ति आय के आधार पर बीस विकसित देशों तथा इतने ही अविकसित देशों का अध्ययन किया है। मैंने अपने पेपर The English Class System में इसका वर्णन किया है। मैंने देखा है कि हर विकसित देश में अपनी भाषा में इंजिनियरिंग, चिकित्सा, विज्ञान, कानून, लेखा की पढ़ाई हो रही है तथा सरकारी काम-काज भी देशीय भाषा में हो रहा है। इन बीस देशों में केवल चार देशों में ही अंगरेजी का प्रयोग हो रहा है क्योंकि वहाँ की मातृभाषा अंगरेजी है। जबकि अविकसित देश इन कामों के लिए जन-सामान्य की भाषा का प्रयोग नहीं कर रहें हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो बीस विकसित देशों की तुलना में लगभग सभी बीस अविकसित देशों में अपनी भाषा के बजाय अंगरेजी का प्रयोग हो रहा है। इससे पता चलता है कि अविकसित देशों में भाषागत संरचना का अभाव है।

भारत में अनके भाषाएं अस्तित्व में हैं, जबकि जापान, कोरिया या पोलैंड में ऐसा नहीं है। हमारे देश में भाषाई विविधता का बहाना बनाया जाता रहा है। भारत की सभी भाषाएँ उसकी धरोहर हैं। भारत की जनसंख्या यूरोप की जनसंख्या से अधिक है। इसे ध्यान में रखकर बड़े स्तर पर समाधान निकालने की जरूरत है। यूरोपियन यूनियन ने अपनी सभी 24 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया है। इन भाषाओं में से किसी भी भाषा का प्रयोग करके वहाँ से व्यापार किया जा सकता है। यूरोप के हर देश ने अपनी भाषा के विकास के लिए यथोचित प्रयास किया है। उन्होंने लातिन एवं ग्रीक भाषा पर आधारित वैज्ञानिक शब्द-भंडार पर विश्वास जताया है।

भारत में उपर्युक्त मॉडल का अनुसरण किया जाना चाहिए। हमारे देश में सभी प्रमुख भाषाएं पूरी तरह से विकसित हैं। इन भाषाओं में सामान्य पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो रहा है। भारत में कई दार्शनिक अवधारणाओं यथा- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्द पहले से ही मौजूद हैं। इन्हें केवल उन्नत करने की आवश्यकता है। मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भी काम हुआ है। भा.प्रौ.सं.कानपुर के संगणक विज्ञान के पूर्व प्राध्यापक एवं भा.प्रो.सं.बीएचयू के वर्तमान निदेशक प्रो. राजीव संगल ने भारतीय भाषाओं के अनुवाद की तकनीक विकसित की है। इनके द्वारा बनाये गये मशीन ट्रांसलेशन सॉफ्टवेयर में मध्यवर्ती अर्थगत भाषा के रूप में संस्कृत का उपयोग किया जाता है। सभी भारतीय भाषाओं का बड़ी सहजता से संस्कृत भाषा में अनुवाद किया जा सकता है तथा इसी प्रकार संस्कृत भाषा का इन भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है। शब्दों के अर्थ के कारण भारतीय भाषाओं एवं अंगरेजी भाषा के परस्पर अनुवाद में कठिनता होती है। भारतीय भाषाओं के मध्य अनुवाद के लिए यह सटीक साधन है।

हमारी नई भाषा नीति ऐसी होनी चाहिए जो देश के आर्थिक

विकास में सहायक हो तथा जो भारतीय भाषाओं के बीच सफल तालमेल बना सके। भारत के ग्रामीण क्षेत्र में जन्म लेने वाले बच्चे अपनी भाषा में पढ़कर डॉक्टर, इंजीनियर, लेखा अधिकारी या वकील बन सके। जैसे जापान, कोरिया या मलेशिया के बच्चे अपनी भाषा में पढ़कर ये सब बनते हैं। प्राचीन काल से ही भारत को ज्ञान का भंडार माना जाता है। भारत का अपनी बौद्धिक सम्पदा के कारण दक्षिण-पूर्वी एशिया, तिब्बत, चीन, अरब तथा यूरोप के देशों में अच्छा प्रभाव है। चीन जैसे दुनिया के हर बड़े देश अपनी भाषा के विकास के लिए एवं उनके प्रचार-प्रसार में प्रचुर मात्रा में धन लगा रहें हैं। यदि हम भारतीय भाषाओं को और अधिक पोषित करते हैं, तो निश्चित तौर पर दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ हमारे संबंध और मजबूत होंगे और हम विश्वगुरु के रूप में पुनः काबिज हो जाएंगे।

संक्रान्त सानू - पूर्व छात्र

भाषा

मुझे खेद तो यह है कि जिन प्रान्तों की मातृभाषा हिंदी है वहाँ भी उस भाषा की उन्नति करने का उत्साह दिखाई नहीं देता है। मेरा नम्र लेकिन दृढ़ अभिप्राय है कि जब तक हिंदी भाषा को राष्ट्रीय और अपनी-अपनी भाषाओं को उनके योग्य स्थान नहीं देते तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

हिंदी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा से नहीं, केवल अंग्रेजी भाषा के साथ है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

कैसा है ये कोहराम ?
कभी भी कोई अल्पविराम ! या
इंसानों से नहीं है चलती दुनिया ,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

पत्थर से बन गए है, फूल वादियों के
मांग रहे हैं जमीन, सबकी जान लेके
इस खेल को अब कोई कैसे देखे ?
जब अमन हर सुबह, फिर चीखें क्यों हर शाम?
इंसानों से नहीं है चलती दुनिया ,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

धर्म के नाम पर हैं छलते
धर्म के नाम पर करते राज
इन्सान ही इन्सान के कत्ल में मसरूफ आज!
क्यूँ है यह शोर, क्यूँ मचा है यह कत्ले आम ?
इंसानों से नही है चलती दुनिया ,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम!

कैसा है ये कोहराम ?
कभी भी कोई अल्पविराम ! या
इंसानों से नही है चलती दुनिया ,
अब आ भी जाओ अल्लाह, आ भी जाओ राम

सौरभ तिवारी, शोधछात्र
अभिकल्प कार्यक्रम

अजनबी

वे बहुत देर से एक दूसरे को देख रहे थे
कनिखयों से किसी को एक बार में पहचानना
कितना मुश्किल होता है
इस बात पर शायद अब दोनों ही राज़ी होंगे
ख़ैर

एक दूसरे से नज़र बचा भी रहे थे
और एक दूसरे को देखने की हसरत भी थी

काफ़ी अरसा हुआ
मन में ये सोच रहे होंगे

एक ज़माने में गहरा राब्ता था इनके बीच
फिर जाने क्यों
एक मोड़ पर
दोनों ने अपनी अपनी राह ले ली
एक अदद अलिवदा भी नहीं हुआ

आज के जैसे ही उस दिन भी नज़र बचाकर
नज़रों से ओझल हो गए थे
उस दिन भी मन में आज ही की तरह एक चोर था
यक़ीनन

आज यहाँ मुलाक़ात होगी
ये पता होता तो
शायद आज भी टाल जाते

तभी अचानक
बेख़याली में
आँखों की झड़प हो ही गयी

कतराते हुए एक दूसरे की तरफ बढ़े
बड़े ही पशोपेश में दुआ सलाम हुयी

हाथ मिलाये गए
हाथों के खुरदरेपन ने
ज़रूर गुज़रे हुए लम्हों का हिसाब पेश किया होगा
तभी हाथ खींच लिए गए

उन लम्हों की खिसियाहट
खुद से थी या सामने वाले से
ठीक ठीक कहा नहीं जा सकता

पर एक फ्लैशबैक सा चल रहा था
कहीं ज़हन में ढेरों हिसाब-किताब
धड़ाधड़ हो रहे थे

"आप कैसे हैं?"
जितना खोखला सवाल शायद
इससे पहले नहीं पूछा गया किसी से

कितने ही शिकवे-शिकायतें
चाय की चुस्कियों में लबों तक आ आकर लौटते रहे

वो बर्फ़ जो गुज़रे दिनों जमती रही थी
इतनी आसानी से कहाँ पिघलने वाली थी

चलिए फिर मिलेंगे
झेंपते हुए कहा
और उलटे पैर
लौट चले

कितना आसान है न?
गहरे से गहरे रिश्तों का, यूँ ही अजनबी हो जाना?

डॉ. अर्क वर्मा

वो दो दिन ...क्यों?

गोपाल बहुत बेपरवाह था। न ही वक्त पर खाना खाता और न ही हफ्ते भर से पहले नहाता। जब वह सप्ताह में एक बार नहाता था तो स्वाभाविक है कि सप्ताह भर एक ही कपड़े भी पहनता था। सेविंग औसतन महीने भर में एक बार करता था और बालों का क्या कहना, बाल से ज्यादा बालों का घोसला कहना यथार्थ होगा क्योंकि वह तीन महीने से पहले तो उसने बाल शायद कभी कभार कटवाए होंगे। लेकिन हाँ खुद की छोड़ पूरी दुनिया की परवाह करता था।

सितम्बर महीने में मिड सेमेस्टर की परीक्षाओं के दौरान ऐसे ही वक्त काटने के लिए वह संस्थान के उस साल आये छात्रो को देखने लगा। वेबसाइट पर जैसे ही उसने देखा कि बहुत दूर के जानने वाली एक फैमिली की एक लड़की श्वेता ने उसके कॉलेज में दाखिल लिया, जो GH-1 के कमरा नंबर D-207 में रहती है , तो उसे संपर्क करने के लिए तुरंत एक ईमेल कर दिया। ईमेल में उसने अपनी फेसबुक, फोन, जीमेल, स्काइप सभी आईडी दे दी ताकि जहाँ उसे सुविधाजनक लगे, वह कॉन्टेक्ट कर सके। श्वेता को थोडा अजीब लगा कि कैसे ऐसे बात-चीत शुरू कर दे इसलिए उसने कोई रिप्लाई नहीं दिया। थोड़े दिनों बाद प्रदेश स्कॉलरशिप का फॉर्म भरा जा रहा था, संयोग से श्वेता के फॉर्म का पीडीएफ गोपाल के हाथ लग गया, जिसमे श्वेता के घर का एड्रेस, माता- पिता के बारे में, उसकी जन्मतिथि, पूर्व शिक्षा का विवरण आदि सभी जानकारी अंकित थी, यहाँ तक कि फोन नंबर भी। उसने फॉर्म डाउनलोड करके अपने लैपटॉप में रख लिया । वक्त के आगोश में श्वेता धीरे-धीरे गोपाल के अंतर्मन से धुंधली हो गयी।

दोनों आईआईटी कानपुर के छात्र थे। गोपाल बीटेक अंतिम वर्ष में था और श्वेता डैब प्रथम वर्ष में। दिसंबर महीने में कैंपस प्लेसमेंट शुरू हुआ। बड़ी मशक्कत के बाद गोपाल को भी एक अच्छा जॉब ऑफर मिला। अपनी वर्षो की मेहनत का फल पाकर वह अपनी सफलता का एकाकीपन में आनंद ले रहा था। दो दिन बाद वह अकेले गंगा बैराज घूम कर लौट रहा था कि रास्ते में एक अनजान नंबर से कॉल आया। फिर अचानक सामने किसी स्त्री की आवाज सुनकर चौंक गया। उसकी आवाज से वह उनकी उम्र का अंदाजा ना लगा सका तो उत्सुकतावश पूछ बैठा कि आप कौन ?....मैं जान नहीं पाया, आपका नंबर ऐड नहीं है मेरे फोन में। आंटी जी ने बड़े ममतामयी शब्दों में

अपना नाम और पता बताया और गोपाल को जॉब के लिए बधाई भी दी। गोपाल के आँखों के सामने तुरंत श्वेता का स्कॉलरशिप फॉर्म घूम गया जिसमें उसकी माँ का नाम और घर का पता आंटी जी के बताये डिटेल से पूरी तरह मेल खा रहा था। गोपाल को समझते देर ना लगी कि वह श्वेता की माँ है। फिर थोड़ा सहज हुआ और बातों-बातों में पूछा कि आपको मेरे बारे में कैसे पता चला, मेरा जॉब और फोन नंबर सब। गोपाल के इस प्रश्न ने आंटी जी को थोड़ा असहज कर दिया। उनको कोई जवाब ना सूझा। आंटी जी की असहजता देख गोपाल समझ गया कि श्वेता ने ही सब कुछ बताया होगा। उसने तुरंत स्थिति संभाली।

"हाँ, फेसबुक से पता चला होगा ।"

आंटी जी ने राहत की साँस ली और बड़ी सहजता से झूठ बोलीं, "हाँ" ऐसे ही थोड़ी बहुत बात-चीत हुई पर श्वेता का जिक्र उन्होंने नहीं किया। मन ही मन गोपाल प्रसन्न हुआ कि चलो, श्वेता ने मेरी ईमेल इग्नोर नहीं की थी।

जनवरी में सत्र का दूसरा सेमेस्टर शुरू हुआ। सारे छात्र सर्दी की छुट्टी के बाद नए सेमेस्टर में एडमिशन लेने कॉलेज आ गए। किन्तु गोपाल के मन में तो सिर्फ श्वेता घूम रही थी । उसने श्वेता को रूबरू नहीं देखा था। अब गोपाल ने फेसबुक खंगाला तो उसे श्वेता का फेसबुक प्रोफाइल मिल गया। लेकिन श्वेता ने अपने प्रोफाइल की प्राइवेसी तगड़ी कर रखी थी। मतलब कि गोपाल न तो श्वेता को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज सकता था और न ही वह श्वेता की कोई फोटो देख सकता था। यहाँ तक कि श्वेता ने टैग हुई फोटो को भी हाईड करके रखा था। प्रोफाइल पिक्चर और कवर पिक्चर के नाम पर बार्बी गर्ल के फोटो चस्पा थे। श्वेता को देखने के उसके सारे प्रयास विफल हो रहे थे, तब गोपाल ने अपनी जासूसी का टॉप गियर लगा

दिया। श्वेता की वाल से उसने उसकी 3-4 पोस्ट, जो दीवाली होली इत्यादि की बधाइयों से सम्बंधित थीं, को खंगाला। फिर उसने उन पोस्ट पर लाइक करने वाले लोगों को निशाने पर लिया । फिर उनमें से करीब दस लड़कियों की छँटनी की जो कि उस विश्वविद्यालय की छात्रा थीं जहाँ से श्वेता ने B-Sc. किया था। उन दस में से गोपाल ने करीब चार लड़कियों को निकाल दिया जो श्वेता की जूनियर या सीनियर थी। अब शेष बची छः लड़कियों की प्रोफाइल को खंगालना गोपाल के लिए आसान काम था । उन छः लड़कियों में दो लड़कियाँ ऐसी थी जिनकी प्रोफाइल में काफी कंटेंट पब्लिक थे। फिर क्या, गोपाल ने उन लड़कियों के फोटो फोल्डर में से ग्रुप फोटो को परखा और उनमें टैग हुए नामों को देखा। आखिरकार उसे दो ऐसी फोटो मिल ही गयीं जिसमें श्वेता टैग थी। एक फोटो एक महीने पहले की थी जिसमें वो छः - सात लड़कियों के साथ ब्राउन ओवरकोट पहने हुई थी। शायद दिसंबर की छुट्टियों में वो अपनी पुरानी दोस्तों से मिली थी। एक फोटो उसके ग्रेजुएशन के वक्त की थी जिसमें अपनी दो दोस्तों के साथ वह किसी स्टेशनरी शॉप के सामने खड़ी थी। फोटो में श्वेता गोपाल को काफी अच्छी लगी। छरहरी काया, चेहरे पर मुस्कान, गौर वर्ण, ठीक-ठाक हाइट। गोपाल को सब कुछ पसंद आया लेकिन इन सबमें एक चीज जिसका गोपाल कायल हुआ वो थी उसकी मासूमियत। वही मासूमियत जिसकी वजह से उसने गोपाल के मेल का उत्तर देने के बजाय उसके बारे में अपनी माँ को बताया।

इच्छायें कभी खत्म नहीं होती बल्कि एक इच्छा पूर्ण होने के बाद दूसरी जन्म ले लेती है। गोपाल के साथ भी यही हो रहा था। फोटो देखने के बाद अब श्वेता को सामने से देखने के लिए वह अधीर हो उठा। फिर क्या, गोपाल ने एकेडमिक की साइट से श्वेता के इस सेमेस्टर के कोर्स पता किये और उन कोर्सेज का टाइम टेबल देखा जिसमें दो कोर्स ऐसे थे कि जब गोपाल अपनी क्लास के लिए जाता तो श्वेता क्लास करके वापस लौटती होती थी और लंच के बाद एक कोर्स ऐसा था जब दोनों एक ही टाइम पर क्लास के लिए जाते। मजे की बात ये थी कि साथ वाली क्लास के क्लास रूम बिल्कुल आमने सामने थे। गोपाल Hall-1 में था और वह पीछे वाले गेट से क्लास के लिए जाता था । मतलब की GH वाले रास्ते से। संयोग से गोपाल को अगले ही दिन मेन रोड और GH के रास्ते के तिराहे पर श्वेता दिख गयी उसी ब्राउन ओवरकोट में। एक बार दिखने के बाद अब श्वेता उसे अक्सर दिखने लगी। गोपाल वो तीनों क्लास करने लगा जिसमें उसे देखने की संभावनाएं थी। अब गोपाल के मन में बात करने की इच्छा जगी।

गोपाल ने अपने दोस्तों से सारी बात बताई और पूछा कि उसे श्वेता से बात करनी चाहिए या नहीं। दोस्तों ने चुटकी ली कि साले सासू माँ से पहले बात कर ली और अब कन्या से बात करने के लिये हम लोगों से पूछ रहा है। फिर काफी तफरी के बाद निष्कर्ष निकला कि एक बार बात करनी ही चाहिए । फिर क्या, गोपाल ने लैपटॉप खोला, पीडीएफ से फोन नंबर लिया और शाम के वक्त कॉल किया । उधर से आवाज़ आई..कौन ?

मैं गोपाल... शायद तुम नही जानती होगी। मैंने मेल किया था तुम्हें ...

अच्छा हां ... याद आया.. और बताइये कैसे हैं?..

ठीक हूँ बस तुम्हारी माँ का कॉल आया था, सोचा तुमसे बात ही कर लूँ। ...

(श्वेता की हालत जैसे काटो तो खून नहीं)

क्या? ...आपको कैसे पता है कि वो मेरी माँ थी ?...

बस पता है, जरुरी थोड़े है कि तुम बताओ, तभी पता चले.. हा.. हा.. हा...।

अच्छा.. बहुत टैलेंटेड हो। वैसे मैंने भी आपका नंबर उसी टाइम सेव कर लिया था जब आपने मेल किया था।

(अब हवाइयाँ उड़ने की बारी गोपाल की थी)

क्या...तो फोन करने पर क्यों पूछा कि ... कौन ?

हा..हा ..हा ... हाँ सही है। थैंक्स । मैं सोचता था कि खोजबीन के मामले में मैं ही आगे हूँ लेकिन तुम तो दो कदम आगे निकली।

और नहीं तो क्या। आप ही एक होशियार थोड़े ना हो..

(खिलखिलाहट के साथ)

तुम GH-1 में D-207 में रहती हो ना ?

अरे अब उसमें नही रहती, उसमें मत जाना कभी। वो पहले सेमेस्टर में रहती थी। अब B-105 में रहती हूँ।

अरे ऐसे ही थोड़े ना D-207 में आता। कभी आऊँगा तो तुमसे बात करके ही आऊँगा ।

"अरे पहली बार था। अब कैसे बोल दूँ कि हाँ जानती हूँ, नंबर ऑलरेडी ऐड है। थोड़ा नखरा तो करना ही पड़ता है न। वैसे

आपको क्या लगता है कि मुझे आपके बारे में नहीं मालूम? आपके बारे में सब पता है और जॉब का भी तभी तो माँ को सब बताया था। खैर, जॉब के लिए कांग्रैच्यूलेशन।"

फिर थोड़ी और बात हुई। एक दिन लंच के बाद साथ वाली क्लास जाते हुए श्वेता साइकिल से गोपाल के आगे निकली । गोपाल ने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी । श्वेता साइकिल पार्क करने के बाद सीढियाँ चढ़कर कॉरिडोर पर पहुँची ही थी कि गोपाल भी तेजी से दूसरी तरफ से कॉरिडोर पर आ गया। नज़रें मिलीं , दोनों के हलक सूख गए।, दोनों ने आहिस्ता स्माइल किया और हाय करके अपने-अपने क्लासरूम में चले गए। यह पहली दफा था जब दोनों ने एक दूसरे से आँखों और होठों, दोनों से संवाद किया था। फिर गोपाल ने फोन करके मिलने का प्रस्ताव रखा अगले दिन मिलने का वायदा हुआ। गोपाल के दोस्त ने दो चॉकलेट खरीदकर गोपाल के जेब में डाल दी। दोनों कॉलेज लाइब्रेरी के पास मिले और फिर चलते-चलते कैंपस रेस्टोरेंट तक गए। कॉफी आर्डर कर बातचीत करने लगे....आपने मुझे पहचाना कैसे ?

क्या बतायें, तुम्हें देखने के लिये मैंने कितनी मेहनत की।

कैसी मेहनत?

अपने फेसबुक में तो तुम ताला लगा कर रखी हो, सो तुम्हारे पोस्ट के लाइक से तुम्हारे दोस्तों तक पहुँचा, फिर उनके प्रोफाइल से तुम्हारी फोटो देखा। वो ब्राउन कलर वाले ओवरकोट से तुम्हें पहचाना।

अरे वाह .... आप तो बड़े वाले आशिक हो... हा...हा...हा..

हाहाहाहा... अच्छा तुमने मुझे उस दिन कैसे पहचाना ?

आप क्या सोचते हो कि बस आप ही एक हो। आप तो मुझे सामने से देख कर पहचाने थे । मैंने तो आपको पीछे से ही पहचान लिया था । तभी तो तेजी से साइकिल भगाया लेकिन आप तो पैदल ही पहुँच गए थे उस दिन... हा..हा..हा..हा..हा

क्या ! पीछे से ही पहचान लिया था ? लेकिन कैसे ?

अरे आपके घोसले जैसे बालो को देखकर ... हा..हा..हा..हा.. हा। दोनों के अट्टहास से रेस्टोरेंट गूँज गया। फिर कॉफी पीते हुए दोनों ने एक दूसरे के बारे में काफी बातें कीं । घर-परिवार से लेकर शिक्षा-शौक सब के बारे में । कॉफी खत्म कर गोपाल ने पैसे दिए जिसपर श्वेता ने एतराज जताया और आधे पैसे देने की ज़िद भी की। फिर घूमते-घूमते दोनों पैदल हाल-1 आ गए। फिर श्वेता ने गोपाल को बाय बोला। गोपाल ने भी फेसबुक पर रिक्वेस्ट भेज देने की बात कह कर श्वेता को बाय बोला। फिर श्वेता साइकिल चलाते हुए बगल के अपने हॉस्टल में चली गयी।

रूम पर आने पर गोपाल को याद आया, वो चॉकलेट देना तो भूल ही गया। फिर वह चॉकलेट को ड्रॉर में रख दोस्तों के साथ मेस में डिनर करने चला गया। दोस्तों ने खिंचाई की और पार्टी भी माँगी। पूरे खाने के दौरान गोपाल का चेहरा शर्म से लाल रहा। श्वेता की यादों में ऐसा डूबा था कि खाना भी ठीक ढ़ंग से नहीं खाया । फिर रूम पर आया तो तुरंत फेसबुक खोला देखा श्वेता की रिक्वेस्ट आई थी । जल्दी से एक्सेप्ट किया और फिर चैटिंग शुरू हुई घंटे-घंटे भर की । गोपाल ने श्वेता को बताया तुम मुझसे सिर्फ 15 दिन छोटी हो और दसवी-बारहवीं एक ही साल पास किये थे। तो तुम मुझे आप नहीं, तुम बोला करो। श्वेता ने गोपाल की बात मानते हुए बताया उसे भी आप कहना अजीब लग रहा था लेकिन वो चाहती थी कि पहले गोपाल कहे 'तुम' कहने के लिए। बातों-बातों में गोपाल ने अपनी एक बीमारी का जिक्र किया जिसका ट्रीटमेंट वो कहने को तो ले रहा था लेकिन जैसा कि वो खुद के लिए बहुत बेपरवाह था, तो 5 महीने से डॉक्टर को दिखाया ही नही था। फिर क्या.. श्वेता ज़िद पर अड़ गयी अगले दिन हॉस्पिटल चलो, मैं ले चलूँगी। गोपाल मना नहीं कर पाया ।

टेस्ट के लिए कैंपस से बाहर जाना ही पड़ता । दोनों क्लास छोड़ कर चल दिए। एक परिचित से बाइक भी मिल गई। टेस्ट करवाया। रिपोर्ट शाम को मिलनी थी और दिन अभी काफी बचा था। दोनों घूमने लगे। पहले गंगा बैराज गए। जहाँ खुले आसमान के नीचे गंगा की फैली रेत के मनोरम दृश्य के बीच बैराज से गंगा के बहने का कलरव मन को आकर्षित कर रहा था। फिर गोपाल ने दो भेलपुरी के लिए आर्डर किया तो श्वेता बोली, नहीं भैया! एक ही बनाना। श्वेता ने गोपाल से बोला ,"पागल! दो क्यों आर्डर किया एक में ही खायेगे दोनों।" फिर वे भेलपुरी खाते हुए दोनों गंगा के मनोहर दृश्य का आनंद लेने लगे। दोनों ने एक दूसरे को भेलपुरी अपने हाथों से भी खिलायी।

दिन अब भी काफी बचा था। दोनों जेके मंदिर गए जहाँ महिला गार्ड ने जोड़ी की सलामती हेतु दुआएँ भी की। इस बात पर दोनों एक दूसरे को देखकर मुस्करा दिए।

दोनों एक दूसरे के हाथ को पकड़ कर घूमे, फिर पानी के पास बैठ कर एक दूसरे के हाथो की रेखाएं देखने लगे और एक से

एक मजेदार भविष्य बताने लगे जैसे कि तुम्हारी इतनी शादियाँ होंगी, तुम्हारे इतने अफेयर हैं, तुम्हारे इतने बच्चे होंगे, तुम्हारी लव मैरिज होगी ... इत्यादि इत्यादि। हर भविष्यवाणी पर दोनों खूब हँसते। गोपाल नास्तिक था और इसके पहले दोस्तों के साथ जब भी आया था तो उसकी अनास्था की वजह से दूसरों की आस्था आहत ना हो, इसलिए हर बार वो मंदिर के बाहर ही रहता था और उनके जूते चप्पल की देखरेख करता था लेकिन मंदिर के अंदर कभी नहीं गया था। लेकिन इस बार अंदर जाने से मना करके वह श्वेता को आहत नहीं कर सकता था इसलिए बाकायदा फूल लिए आस्था रहित लेकिन पूर्ण आस्तिक होने का स्वांग करते हुए श्वेता के साथ मंदिर में दर्शन किये।

दर्शन करके बाहर आये तो गोपाल ने अपने बाइक वाले दोस्त को बुला लिया। तीनो ने साथ-साथ डिनर किया, फिर एक दूसरे रेस्टोरेंट में गुलाबजामुन तथा आइसक्रीम खाये। ठण्ड ज्यादा थी तो श्वेता ने गोपाल के सिर पर अपना दुप्पटा बाँध दिया। करीब नौ बजे दोनों कैंपस पहुँचे । श्वेता और गोपाल काफी खुश थे, खासकर बाइक से गंगा बैराज घूमना श्वेता को काफी अच्छा लगा। डॉक्टर के साथ अपॉइंटमेंट अगले दिन शाम छः बजे था इसलिए श्वेता ने कल भी साथ चलने को कहा। फिर दोनों अपने-अपने हॉस्टल चले गए।

उस रात कोई चैटिंग नहीं हुई। अगले दिन क्लास बंक करके दोनों फिर स्वरुप नगर के लिए चल दिए । गोपाल ने ड्रॉर से आज चॉकलेट ले ली थी । फिर उसी दोस्त से बाइक लेकर पहले दोनों टेस्ट रिपोर्ट लेने गए। रिपोर्ट के अनुसार गोपाल की कंडीशन पहले से ज्यादा बुरी थी। वहाँ से डॉक्टर की क्लीनिक को चलते हुए गोपाल ने श्वेता को जेब से चॉकलेट निकाल कर दिये । श्वेता ने आधा चॉकलेट बाइक पर ही गोपाल को अपने हाथों से खिला दिया। डॉक्टर ने दवा लिखी और बदतर हुई कंडीशन पर चिंता भी जतायी। फिर डॉक्टर ने पूछा कब तक हो कानपुर में? गोपाल ने बताया, बस 4 महीने और रहूँगा। श्वेता ने बड़े जोश में बताया कि इनकी जॉब लग गयी है 15 लाख के पैकेज पर। डॉक्टर ने खुशी के साथ बधाई दी और पूछा क्या उम्र है अभी? गोपाल ने बोला 21 साल, तो डॉक्टर हँसते हुये बोला, अरे, वाह... सही है। इतने उम्र में हम डॉक्टर लोग तो खेल खा रहे थे। श्वेता बोली अंकल जी पर अब तो आप पता नहीं कितना लूट रहे हैं। फिर तीनो जोर से हंसने लगे।

डॉक्टर के पास से निकलने के बाद काफी देर हो चुकी थी। दोनों ने पास के ही एक साधारण से रेस्टोरेंट में डिनर किया, जहाँ फिर दोनों ने एक दूसरे को अपने हाथों से खाना खिलाया। फिर दोस्त को बाइक देकर बस से कैंपस के लिए चल दिये । गोपाल काफी खुश था। श्वेता को पाकर वह अपनी बीमारी भूल चुका था। लेकिन श्वेता का व्यवहार आज काफी बदला-बदला सा था। वो बस में चुपचाप बैठी थी । गोपाल ने पूछा तो बोली बस ऐसे ही, सब ठीक है। गेट से श्वेता ने अपनी साइकिल ली , गोपाल बोला लाओ मुझे दो मैं साइकिल चलाऊँ तुम पीछे बैठो। श्वेता ने मना कर दिया बोली पैदल चलते हैं।

गोपाल...ये बताओ अगर मैं तुमसे बात करना मिलना बंद कर दूँ तो तुम क्या करोगे ?

ये क्या बोल रही हो यार! ऐसा मजाक मत करो...

मजाक नहीं, सीरियसली पूछ रही हूँ .. बताओ ना (श्वेता ने जोर जिद की)

अब भला मैं इसमें क्या बताऊँ। तुम नहीं चाहोगी, तो जबर्दस्ती थोड़े ना करूँगा। अगर कोई गिला शिकवा होगा तो मनाऊँगा । बाकी अगर तुम दूर रहकर ही खुश रहोगी, तो कोई ज़िद नहीं करूँगा मैं।

गुड, यही पूछ रही थी कि कहीं कुछ पागल लडकों की तरह पीछा करना, बार-बार कॉल करना, रोज रोज तंग करना-ये सब तो नहीं करोगे।

ऐसे पागलपन का तो सवाल ही नहीं उठता। मैं किसी भी लड़की को परेशान नहीं कर सकता तो तुम्हे कैसे। यही सब करना होता तो मेरे पास तुम्हारा नंबर बहुत पहले से था, तब भी बात कर सकता था लेकिन मैंने भी तब बात की जब आंटी जी का फोन आया।

हाँ, मालूम है गोपाल। तुम अच्छे लड़के हो। ऐसा नही करोगे।

लेकिन श्वेता! ये सब बकवास क्यों कर रही हो... गोपाल दुखी मन से बोला।

एक्चुअली.....अब मैं तुमसे नही मिल सकती और ना ही तुमसे बात कर सकती हूँ।

लेकिन क्यों ? गोपाल की हालत रोने जैसे हो गयी

यार क्या बताऊ, मैं अपराध बोध से दब गयी हूँ।

कैसा अपराध बोध श्वेता ?

कल आकर शाम को मैंने माँ से बात की लेकिन कल मैंने क्या किया उन्हें ये नहीं बता सकी और न ही यह कि कल तुम्हारे साथ थी। जबकि आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ। मेरे क्लास के लडके मेरे रूम पर आते है मैं भी उनके रूम पर गयी हूँ, ये सब मैं माँ को बता देती हूँ, मेरे घर वाले भी जानते है। पता है ये सब क्यों बता लेती हूँ क्योंकि वो सब दोस्त है और मेरे मन में उन सब के लिए कभी कुछ नही आया और न है, इसलिए मैं सब माँ को सहजता से बता पाती हूँ। लेकिन पता नही क्यों, मैं कल के बारे में तुम्हारे बारे में माँ से बताने की हिम्मत नही जुटा पाई। शायद मैं कुछ गलत कर रही हूँ इसलिए सब कुछ बताने वाली मैं कल उन्हें कुछ भी न बता पायी। कल से इसी बात को लेकर मैं गिल्ट में जी रही हूँ। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। तुम बहुत अच्छे लडके हो। लेकिन मैं एक सीधी-सादी लड़की हूँ। मेरे घर में अभी किसी लड़की ने कोई बॉयफ्रेंड नहीं बनाया। दोस्त तक ठीक था लेकिन मैं दोस्ती भी नही रख पाऊँगी क्योकि फीलिंग दोस्ती से आगे बढ़ चुकी है जो साथ रहने पर घट नही सकती । इसलिए अच्छा है कि तुम मुझे भूल जाओ... प्लीज। इन सब के लिए सॉरी ।

दो दिन तक आकंठ प्रेम में डूबे गोपाल ने इस आकस्मिक जुदाई का दर्द पीते हुए अपने रुंधे गले को साफ़ किया फिर भावनाओं को छिपा कर बोला पागल ...सॉरी क्यों बोल रही हो? तुमने तो मेरी हेल्प की वर्ना मैं इतना लापरवाह हूँ कि डॉक्टर को दिखाता भी नही। मुझे तो तुम्हे थैंक्स बोलना चाहिए। और रही मुझे लेकर तुम्हारे अपराध बोध की बात तो यार इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? दो ही दिन तो हुए है। किसी रिश्ते में जब दूसरे दिन ही अपराधबोध होने लगे तो समझो आगे जाना गलत है। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ सकता हूँ। मैं तुम्हे तुम्हारे इरादे से विचलित भी नहीं करूँगा। तुम अगर अपनी फीलिंग से बढ़कर घरवालों को प्राथमिकता देती हो तो यह बहुत अच्छी बात है। बस एक बार पक्का सोच कर बता दो कि क्या सच में तुम मुझसे आज के बाद बात नहीं करोगी?"

हाँ , मैंने बस में ही सोच लिया था कि आज यह अंतिम दिन है।

ठीक है। जब तुमने पक्का सोच ही लिया है तो मैं भी खुद पर कंट्रोल करूँगा और तुमसे दूर रहूँगा। अब तुम अपराध बोध में मत रहो। ठीक है न ? अरे यार अब आगे खुश रहना।

वैसे तुम बहुत गंदे हो । तुमने अपनी बीमारी के बारे में न बताया होता तो ये दो दिन तुम्हारे साथ शायद होती भी नहीं। किसी को परेशान देखकर उसकी हेल्प करने से ... मैं खुद को रोक नहीं पाती।

अच्छा, तो ये बात है। मतलब तुमसे अगर फिर मिलना हो तो मुझे बीमार होना पड़ेगा ..... हा..ह..हा..हा

दुष्ट! .... मुझे पता था तुम यही जवाब दोगे..... हे..हे.. हे..हे ... लेकिन सीरियसली..., अब नहीं मिलेंगे।

दोनों GH के सामने थे। गोपाल श्वेता को आखिरी अलविदा कह अपने हॉस्टल की तरफ चल दिया। श्वेता की बातों से वह संतुष्ट नहीं था। वह तब भी और आज भी इस सवाल का जवाब जानना चाहता है कि आखिर श्वेता ने उसे क्यों छोड़ा ? अगर श्वेता के मन में कुछ नहीं था, तो वो दो दिन क्यों ..... आखिर क्यों.....?????

राहुल बिन्द, पूर्व छात्र

देशीय ज्ञान

विदेशी भाषा के माध्यम से भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है जिसने हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुँचाया है। जिन विषयों को सीखने में मुझे चार साल लग गये अगर अंग्रेजी के बजाय गुजराती में मैंने पढ़ा होता तो उतना मैंने एक ही साल में आसानी से सीख लिया होता। इस अंग्रेजी माध्यम ने मेरे और मेरे कुटुम्ब के बीच, जो कि अंग्रेजी स्कूलों में नहीं पढ़े थे, एक अगम्य खाई कर दी है।

महात्मा गाँधी

एक अंजाना सफर

एक मैं और मेरी जिंदगी,
कहीं जा रहे थे अकेले,
किसी अनजान रास्ते पर,
बस मैं, मैं और मैं....

ऐसी कठनाईयों पर कभी ना चला था मैं,
लेकर साथ, मेरा प्यार, गम, खुशी और थोड़े से हौसले को लेकर,
क्या पता! क्या चीज थी वो,
जो आगे बढ़ा रही थी मुझे, उसी अनजान रास्ते पर,
जहाँ जा रहा था मैं लेकर अपने शरीर को तनहा अलग और बस अकेले,
बस मैं, मैं और मेरा सफर.....

पर्वत आया, पत्थर आया, नदी आई तो कभी बवंडर,
कभी मुश्किलें आईं, तो कोई आया नजर,
बस अपना सा लगा वो, जैसे कोई हमसफर,
उसी को लेकर मैं बढ़ा आगे,
उसी अनजाने मगर अपने से रास्ते पर.....
न जाने कब, था मैं अकेले,
जैसे भूल ही गया मैं वो डरावना सफर,

और न जाने कब बन गया ये अकेला,
अब किसी का महबर.....

अमरजीत प्रकाशराव केने (छात्र)

नीड़

हिय पल-छिन
नव निर्माण करे
जग की डाली पर
मन पाखी के
स्वप्निल नीड़ धरे।
नई आस उम्मीदों
नव स्वप्नों के,
नवकल्पना
नवसृजन के,
दाने-तिनके
नए पात लिए।
सुख-दुःख के
अविरल रंगों के
उन्मुक्त उड़ान
नवपंखों से,
साहस उमंग
उत्साह लिए;
हिय पल-छिन
नवनिर्माण करे !

ओम प्रकाश शर्मा
(कंटेंट राइटर 'शब्दनगरी')

भौतिक चिकित्सा

आधुनिक जीवन शैली की तेज रफ्तार एवं भागदौड़ भरी जिंदगी में व्यक्ति अपनी सेहत का ध्यान रखना ही भूल गया है और इसका नतीजा यह हुआ कि आज हम युवावस्था में ही ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल, मोटापा, गठिया, थायराइड जैसी अनेक बीमारियों से ग्रस्त होने लगे हैं जो कभी प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था में हुआ करती थीं। इसकी सबसे बड़ी वजह है खान-पान और रहन-सहन की गलत आदतें। अनुशासित जीवन शैली अपनाकर हम अपने आप को ही नहीं बल्कि अपने परिवार को भी स्वस्थ रख सकते हैं। ऐसा करके हम एक स्वस्थ एवं मजबूत समाज और देश का निर्माण भी कर सकते हैं।

व्यायाम के जरिए मांसपेशियों को सक्रिय बनाकर किए जाने वाले इलाज की विधा भौतिक चिकित्सा अर्थात् फिजियोथेरेपी या 'फिजिकल थेरेपी' (Physical therapy) कहलाती है। चूंकि इसमें दवाइयां नहीं लेना पडतीं इसलिए इनके दुष्प्रभावों का प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि फिजियोथेरेपी तब ही अपना असर दिखाती है जब इसको समस्या दूर होने तक नियमित रूप से किया जाए।अगर शरीर के किसी हिस्से में दर्द है और आप दवाइयां नहीं लेना चाहते तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। फिजियोथेरेपी की सहायता लेने पर आप दवा का सेवन किए बिना अपनी तकलीफ दूर कर सकते हैं। लेकिन इसके लिए फिजियोथेरेपिस्ट की सलाह अत्यंत आवश्यक है।

फिजियोथेरेपी का मतलब जीवन को पहचानना और उसकी गुणवत्ता को बढ़ाना है साथ ही साथ लोगों को उनकी शारीरिक कमियों से बाहर निकालना, उनका इलाज करना और व्यक्ति को पूर्ण रूप से आत्म-निर्भर बनाना हैं। भौतिक चिकित्सा या फिज़ियोथेरेपी अथवा फिजिकल थेरेपी (Physical therapy) एक स्वास्थ्य प्रणाली है जिसमें लोगों का परीक्षण किया जाता है एवं उपचार प्रदान किये जाते हैं ताकि वे आजीवन अधिकाधिक गतिशीलता एवं क्रियात्मकता विकसित करके उसे बनाये रख सकें। फिजियोथेरेपी के अन्तर्गत वे उपचार आते हैं जिनकी वजह से व्यक्ति की गतिशीलता अर्थात चोट, बीमारी एवं उसके वातावरण से जिंदगी खतरे में पड़ जाती है।

स्वास्थ्य केन्द्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में फिजियोथेरेपिस्ट होने के नाते मुझे परिसर में लोवर बैक पेन, स्लिप डिस्क, सरवाइकल रेडिकुलोपेथी, कार्पल टन्नल सिंड्रोम,

फ्रोजन शोल्डर जैसे वात रोगों से ग्रस्त परिसरवासियों की भारी संख्या देखने को मिली है। पिछले छः सालों के दौरान जिन्होंने मेरे यहाँ अपना इलाज कराया है जब मैं उनके आँकड़ों पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में फ्रोजन शोल्डर एक आम समस्या बन गई है। इस समस्या ने मुझे इस बात पर गहराई से सोचने को मजबूर कर दिया कि संस्थान परिसरवासियों में ज्यादा फ्रोजन शोल्डर की समस्या क्यों उत्पन्न हो रही है। उनसे बात करते हुए जब मैंने उनकी दिन-चर्या के बारे में जानकारी हासिल की तो मैंने पाया कि यह समस्या मुख्यतः शोल्डर के कम प्रयोग करने की वजह से हो सकती है । इसके अतिरिक्त इसका एक अन्य कारण रोगियों में मधुमेह की बीमारी भी हो सकती है। इनके अलावा कंधे के जोड़ के पास स्पोर्टस इंजरी भी इस समस्या को बढ़ावा देती है। क्योंकि फ्रोजन शोल्डर की समस्या को ठीक होने में काफी समय लगता है इसलिए मैंने संस्थान परिसरवासियों को इस समस्या के प्रति जागरूक करने की सोची। मैंने उनको अपने कंधे को पूरी तरह से (अर्थात् 0-180 डिग्री) तक व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया। यदि व्यक्ति के कंधे के जोड़ में पहले से दर्द है तो उसे (इससे पहले कि कोई दूसरी समस्या उत्पन्न हो) इस बारे में तुरन्त डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए।

फ्रोजन शोल्डर एक कष्टकारी समस्या होती है जो कंधे की गति को प्रभावित करती है। कंधे में होने वाला दर्द : कंधे के जोड़ की आंतरिक बीमारी या किसी विशेष ढाँचे में विकृति की समस्या या फिर सर्वाइकल स्पाइन अथवा अंतडियों (विसरल) के कारण उत्पन्न हो सकता है ।

कंधे के जोड़ के आस-पास आर्टिक्यूलर कैप्सूल सूज जाती है । उसके पश्चात् कैप्सूल सिकुड़ने लगता है। इसके सिकुड़ने के पश्चात् कंधे के आस-पास दर्द होना शुरू हो जाता है जो आगे की तरफ कंधे के मूवमेंट को रोकता है।

रोग संबंधी विशेषताएं

उम्र 40-70 वर्ष

इस समस्या के दौरान व्यक्ति को अपने कन्धे को ऊपर और पीछे की तरफ मूवमेन्ट करने में काफी परेशानी होती है। जब यह समस्या अपनी प्रगति अवस्था में होती है तो व्यक्ति को कपड़े पहनने अपने बाल सवांरने में भी दिक्कत आती है। यह मधुमेह बाल रोगियों में आम समस्या है।

फ्रोजन शोल्डर की अलग-अलग अवस्थाएं

दर्द वाली अवस्था (2 से 9 महीने तक)

इसमें दर्द धीरे-धीरे शुरू होता है । इसको भुजा के बाहरी ओर महसूस किया जा सकता है इसको कोहनी (एलबो) एवं अग्रभुजा तक भी महसूस किया जा सकता है । यह आराम की अवस्था में कष्टकारी हो सकता है जबकि भुजा को हिलाने-डुलाने पर स्थिति और अधिक खराब हो सकती है । इस समस्या के कारण अक्सर नींद प्रभावित होती है क्योंकि इस स्थिति में लेटना कष्टकारी या फिर असंभव होता है। इस दौरान कंधे की गति भी कम हो जाती है।

स्टिफ अवस्था (4 से 12 महीने तक)

विशेषरूप से ट्विस्टिंग मूवमेंट में जैसे ही व्यक्ति अपने हाथ को पीठ के पीछे या सिर के ऊपर ले जाने की कोशिश करता है तो कंधा धीरे धीरे कड़ा हो जाता है ।

स्वास्थ्य लाभ की अवस्था (5 से 18 महीने)

इस अवस्था के दौरान दर्द या कंधे का ठोसपन ठीक होना शुरू हो जाता है और व्यक्ति अपनी भुजा का एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह प्रयोग करना शुरू कर देता है।

उपचार की विधियाँ

इसके उपचार में एन्टी इन्फ्लैमटरी मैडिसन एवं फिजियोथेरेपी (भौतिक चिकित्सा) कारगर होती हैं । शोल्डर मोबलाइजेशन थेरेपी लगभग सभी मामलों में लाभप्रद होती है । आमतौर पर रोगी इस उपचार को पसंद करते हैं तथा 4-8 सप्ताह के अंदर ठीक हो जाते हैं ।

सर्जरी

यदि व्यक्ति के कंधे में अत्यधिक दर्द और कठोरपन है तो डॉक्टर उसको ऐनस्थेटिक के तहत मैनिपूलेशन आर्थोस्कोपी आपरेशन की सलाह दे सकता है। इसमें डिस्टेंशन प्रोसिजर शामिल होती है जो कंधे के जोड़ के आस-पास टाइट कैप्सूल को फैलाने की कोशिश करता है। टाइट कैप्सूल को ढीला किया जा सकता है या फिर हटाया भी जा सकता है।

व्यायाम

इस समस्या से बचने के लिए दिन में एक या दो बार व्यायाम अवश्य करें । सभी दिशाओं (क्लोक वाइज एवं एन्टी क्लोक वाइज दोनों दिशा में) अपने कंधे को नियमित रूप से घुमाएं। यदि व्यक्ति को एक बार फ्रोजन शोल्डर की समस्या हो जाती है तो ठीक होने के पश्चात भी यह उसको दुबारा परेशान कर सकती है । जीवन में इसकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए नियमित रूप से व्यायाम अवश्य करें ।

जब व्यक्ति इन व्यायामों को करता है तो वह दर्द या खिंचाव महसूस करता है । यदि व्यायाम करने के बाद भी व्यक्ति को तेज दर्द रहता है तो व्यायाम बंद कर दें तथा तत्काल अपने डाक्टर अथवा फिजियोथेरेपिस्ट से परामर्श करें।

डॉ संजय भगत
फिजियोथरेपिस्ट

सोंचें

बारिश आने के पूर्व ही छाता लगाकर अपना बचाव कर लिया जाए।
रोगी होकर चिकित्सा कराने से अच्छा है कि बीमार ही न पड़ा जाए। आयुर्वेद का प्रयोजन भी यही है। स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा एवं रोगी के रोग का शमन। आयुर्वेद की दिनचर्या, ऋतुचर्या, विहार से सम्बन्धित छोटे-छोटे किन्तु महत्वपूर्ण सूत्रों को अपने दैनिक जीवन में सहज रूप से धारण कर हम अपने आपको स्वस्थ एवं निरोगी बनाए रख सकते हैं।

भाषाओं का सम्मेलन

भाषाओं के सम्मेलन में अँग्रेजी इठलाई
बोली सुई से जहाज तक सारी चीजे मैंने बनाई
और दुनिया की साम्राज्ञी कहलाई
गर्व से बोली अँग्रेजी,
मेरा लोहा तुम सभी मानो
तभी खैर अपनी जानो।

जर्मन क्रोध में आयी, भड़की और चिल्लाई
मैंने कभी न की तेरी गुलामी
मैं हमेशा रही स्वाभिमानी
बोली एटम बम का गणित मैंने ही बनाया
अरी इंग्लिश ज्यादा न इतरा
लगता है तेरा अंत करीब आया।

जापानी आगे आई, थोड़ा लजाई-सकुचाई
बोली नागासाकी, हिरोशिमा के बाद
मैंने भी अपनी ताकत खूब बढ़ाई
अब नहीं कर सकता कोई मनमानी
मैं भी हूँ अपने क्षेत्र की रानी
कम्प्यूटर माइक्रोप्रोसेसर चिप की
तकनीक अगर तुमको हो पानी
तो तुम्हें सीखनी होगी जापानी।

तभी किसी ने हिंदी को उकसाया
कि तेरी क्या है माया?
इंग्लिश बीच में ही बोल पड़ी....
अरे ये क्या कहेगी, ये तो हो चुकी है जर्जर
इसकी कोई तकनीक नहीं, है हम पर ही निर्भर
इसका अब नहीं रहा मान,
ये तो इंग्लिश बोलने में ही समझती अपनी शान
इंग्लिश बोली इसके घर तो अब मेरा ही बोल-बाला है
और इसका भविष्य तो नितांत काला है

सभी ने किया इंग्लिश का समर्थन
और उस सम्मेलन में व्यथित हुआ हिंदी का अंतर्मन।

हिंदी सोच रही है और कोस रही है
उस अकर्मण्यता को, अशिक्षा एवं भ्रष्टाचार को
जिसने उसके रक्त को कर दिया है प्रदूषित
और उसके सौन्दर्य, प्रतिभा एवं पुरातन समृद्ध वैभव को
जिसने किया है अवशोषित।
हिंदी बोली जर्जर नहीं लाचार नहीं
मैं अक्षर अविनाशक हूँ,
विध्वंस की नहीं शांति की उपासक हूँ
पाश्चात्य का अन्धानुकरण
जब उत्पन्न करेगा ना-ना वर्ण रोग
तब श्रेयस्कर होंगे प्राचीन पतंजलि योग
याद करो उस काल को जब
अशोक ने शांति की शिक्षा चारों ओर फैलाई थी
और सभी ने कर्मण्येवाधिकारस्ते की दीक्षा यहीं पायी थी।

सम्मेलन के तानों से व्यथित हिंदी ने हुंकारा लगाया
रे दंभियों तुमने जो कुछ भी है बनाया
वह सब है परम शून्य में समाया
और याद रखो, ये शून्य में समाया
अंधेरा अब छटने को है
और सतत निर्माण को आतुर है हिंदी
धैर्य रखो आने वाले समय में देश ही नहीं
विश्व के ललाट पर चमकेगी यह बिंदी
सम्मेलन में तब गहन मौन था छाया
और हिंदी का सभी ने जयकारा लगाया ।।।

सोमनाथ डनायक
तकनीकी अधीक्षक

जब आप आये

रिमझिम बारिश भी आज किसी के आने का आभास दिलाये
हवा के झोंके किसी के छूने का एहसास दिलाये
शाम से ये खुली आँखें भी बंद हो गईं
मगर कहाँ जायें बंद आँखों में भी आप नजर आए
हरे-हरे पेड़ में भी दोस्ती नजर आये
पक्षियों की आवाज भी आज हमें संगीत लगे
फूल के खिलने में आप की मुस्कराहट नजर आये
आज! क्या करें दिल की हर धड़कन में आप छा गये
सूरज की रौशनी भी एक आशा की किरण लाये
बादल के आने से ये दिल में तूफान आ जाये
ये बेबस दुनिया भी आज खूबसूरत नजर आये
और! ये मचलता मन आप के पास ही ठहर जाये.....

डॉ. बीनापानी महालिंगा
परियोजना वैज्ञानिक

सूरज की वंदना

सुबह उठा तो एक शीतल पुरवाई का अहसास हुआ,
नज़रें जब बाग की तरफ गईं तो मन खिल गया।
कनेर के पौधे में गुलाबी फूल खिल ऐसे हंस रहे थे,
मानो सूरज से कह रहे हों कि उन्हें किरणों से नहला दे।।
नीम के पेड़ पर बैठी गौरैया और उसके चहकने की आवाज,
रात्रि मे दूब पर एकत्र हुई ओस की चमकती बूँदें,
क्षितिज पर मौजूद ऊँचे आकाश को छूते वयस्क पेड़,
सब यूँ प्रतीत हो रहे थे,
मानो मिलकर सूरज की वंदना कर रहे हों।।

प्रवेश चन्द्र शुक्ला, शोध छात्र

छीन ले हे ईश्वर

छीन ले हे ईश्वर मुझसे मेरी
दोनों आँखे, मेरा दिल, मेरा मस्तिष्क, मेरा शरीर,
क्या देखूं, क्या सुनूं,
ये दर्द, ये इर्ष्या ये जंग,
क्यूँ देखूं?
बदरंग आँखों से रंगीन दुनिया दिखाने वाले,
कर दे बदरंग सबको या
रंग दे दामन इतना
कि मैं और मेरी परछाई तक एक लगे
छीन ले हे ईश्वर सबसे सबका रंग,
और बरसा दे ये पिघला नीलम
मन-मष्तिस्क पर
ना प्यार दे, ना बैर,
ना बर्फ दे, ना रेत,
छीन ले सबकुछ एक पहर,
बस करम कर इतना
अगले पहर थोड़ी सी बुद्धि दे,
कुछ रंग दिखा, कुछ रूप,
थोड़ी धूप भी हिस्से में दे, और पूछ
"ऐ कोरे जमीं के टुकड़े वालों,क्या पाया,
स्याही या मुहब्बत?"
छीन ले हे ईश्वर मुझसे,
और मिल जाने दे मुझे, तुझसे, मुझसे, हमसब से।

हरिशंकर, छात्र

मर्म

हम सभी की निस्बत कपड़ों से
बस बाहरी दिखावे की ही है
दोष किस किसको दें ?
इतिहास खंगालने पर मिलता है कि
नासूत ही हमेशा से ऐसी है
जो भी हमसे थोड़ा रहम करम करता है
उसी को हम अपने कसाई हाथों से कुर्बान कर
किसी पेड़ या चौराहे पर लटका देते हैं।
हाड़ कंपा देने वाली ठण्ड में
जो लबादा हमसे लिपट कर
हमको गर्माहट देता है
उसको हम अगली ही सुबह
ठन्डे ठन्डे पानी से नहला देते हैं
जो गमछा धोती गर्मी में
शरीर के पानी को बचाने की भरसक कोशिश करती है
उसे ही हम उस झुलसा देने वाली धूप और
लू में अकेला किसी रस्सी से लटका देते हैं
कहीं उड़कर छाँव में न चली जाये,
तो उसे किसी कांटे से कस देते हैं
जब उस मिलन की बरसात में
हर कोई अपनी रूह को भिगाना चाहता है
तब हम अपने कपड़ों को बंद कमरों में छोड़
अपनी अपनी अंटिया पर बड़ा मज़े से लोटते हैं
अगर किस्मत से कोई बाहर रस्सी पट लटका छूट भी जाता है
तो दौड़कर उसको झपट लेते हैं और पंखे के सामने फैला देते हैं

आयुष गुप्ता
छात्र

कैसा घोर अन्याय करते हैं?
जब भी ये सवाल उठाओ तो
सब स्वार्थ से परिपूर्ण दलीलें लेकर आ जाते हैं
वो तो निर्जीव हैं ...
उनमें तो जान ही नहीं ...
वो कहाँ बोलते है ....
और वो सब लोग ही,
जब किसी शादी समारोह संस्कार में जाते हैं
तब तो हमेशा ही उनसे ज्यादा उनके कपड़े बोलते हैं
जब भरी बाज़ार में कोई उनकी शर्ट का कालर पकड़ता है
तब क्यों इतना बेईज्ज़त सा महसूस करते हैं ?
और तो और अगर किसी इंसान और कपड़े को
किसी नियत अवधि के लिए
अपनी आँखों से ओझल दूर
किसी कमरे या बक्से में रख दें
तो ये भी समझ आ जायेगा कि
वो तो अमर हैं, शाश्वत हैं
दुर्भाग्य, इंसानों का हृदय इतना नातर्स*,
कभी किसी धोबीघाट पर उसको पीट पीट कर अधमरा किया
कभी घर पर वाशिंग मशीन में डालकर निचोड़ दिया
अपने नकली रंग को छुपाने उन्हीं को बदरंग कर दिया।

* कठोर हृदय

विदा

आज विदा होगी शकुन्तला
सोच हृदय आता है भर-भर,
दृष्टि हुई धुँधली चिन्ता से
रुद्ध अश्रु से कण्ठ रूद्ध स्वर।
जब ममता से इतना विचलित
व्यथित हुआ वनवासी का मन,
तब दुहिता विछोह नूतन से
पाते कितनी व्यथा गृहीजन!
ग्रहण किया था कभी न जिसने
तुम्हें पिलाये बिना स्वयं जल,
मण्डनप्रिय होने पर भी जो
नहीं स्नेह से तोड़ सकी दल,
जन्म तुम्हारे नव मुकुलों का
जिसके हित होता था उत्सव,
वह शकुन्तला जाती पतिगृह
आज अनुज्ञा दो इसको सब।
जिसका कुश से विद्ध देख मुख

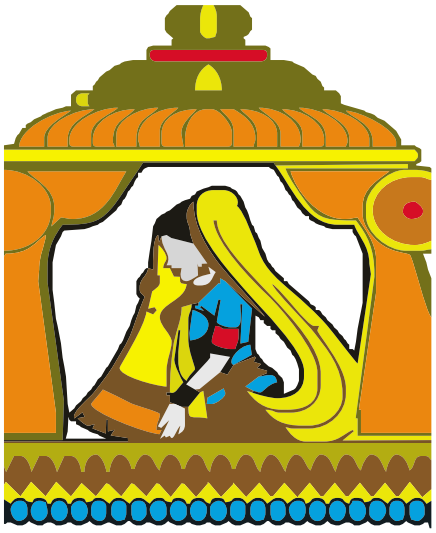

इंगुदि-तेल लगाया क्षत-हर,
सावाँ कण दे पाला सुत सम
खड़ा हरिण वह राह रोककर
जिनसे उत्पक्ष्मण तेरे दृग
देख न पाते पथ नत-उन्नत,
धीरज धरकर अश्रु पोंछ ले
विषम-भूरि, हों चरण न विचलित।
कमल वनों से हरित सरोवर
मिलें पन्थ में रम्यान्तर हों,
छाया सहित पंथ के द्रुम भी
रवि-किरणों के आतपहर हों,
सरसिज के कोमल पराग सा
मृदुल पंथ का धूलि-निचय हो,
शान्त और अनुकूल पवन से
यह तेरा पथ मंगलमय हो।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

स-आभार

महादेवी वर्मा का जन्म संवत् 1934 में उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध नगर फर्रूखाबाद में होलिका दहन के पुण्य पर्व के दिन हुआ था। आपकी माता हेमरानी साधारण कवयित्री थीं तथा श्री कृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थीं। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही आपका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया था। इन्हीं दिनों आपकी माता का स्वर्गवास हो गया। इसके बाद भी आपने अध्ययन जारी रखा। आपको चित्रकला और संगीत में आपकी विशेष रुचि थी। जिसका प्रमाण आपकी कविताओं में दृष्टिगोचर होता है।

जागो रे, जागो रे, जागो...

जागो....
छूट जाये ना
ये पल ये घड़ी
रह जाए ना
तू पीछे कहीं
जागो रे, जागो रे, जागो...
जागो....

आसमां में है
बादलों की लड़ी
वो खेल रहे
लुका छिप्पी
तू भी खेल जरा
दे पकड़ धप्पी
छूट जाये ना
ये पल ये घड़ी
जागो रे, जागो रे, जागो...
जागो....

गीली गीली दूब
बरसी ओस झड़ी
रंग सतरंगी
मोतियों की लड़ी
तू भी रंग जा जरा
सुबहो रंग भरी
छूट जाये ना
ये पल ये घड़ी
जागो रे, जागो रे, जागो...
जागो....

हँस रहे हैं फूल
उड़े तितली बड़ी
हर तरफ खुशबू
बिखरी है पड़ी
तू लेले मजा
है जन्नत यही

छूट जाये ना
ये पल ये घड़ी
जागो रे, जागो रे, जागो...
जागो....

जो सोया है
सो खोया है
जो जागा है
सो पाया है
छोटी सी है
जिंदगी की लड़ी
छूट जाये ना
ये पल ये घड़ी
जागो रे, जागो रे, जागो...
जागो....

अज्ञात

चशमिश

चशमिश उठाता पुस्तकें
सारी दुनिया भर की,
रोज पाठशाला जाता
खाकर रोटी घी
नहीं पड़ती डाँट उसे माँ से,
उसे कोई भी सवाल दो,
दो मिनट में बोलेगा यह लो रे।
आता है उसे कैसे करें कपड़ों को इस्तरी,
धार्मिक भी है,
बोलता ओम श्री, ओम श्री,
ऐसा कोई सवाल नहीं,
जिसे वह सुलझा ना पाता,
कभी-कभी हम सोचते,
वह मनुष्य है या है दाता।

कु. अनन्या नायर

कु. अनन्या नायर

ज्ञानी का ज्ञान

देखो बेताल मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।

नहीं राजन् चलो मैं चलता हूँ।

विक्रम उसे लटकाकर चल पड़े। अभी थोड़ा ही रास्ता पार हो पाया था कि वेताल बोला-राजाविक्रम तुम यह कहानी सुनो।

बकवास बंद करो। मैं तुम्हारी एक न सुनूँगा।

राजा विक्रम इतना गुस्सा न करो। रास्ता आराम से कटेगा। सुनो-और फिर वेताल कहानी सुनाने लगा।

मगध देश में एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहता था। उसके दो पुत्र थे। दोनों बड़े ही मेधावी थे। बड़ा पुत्र तो स्पर्श मात्र से यह बतला सकता था कि कौन क्या है अथवा कौन सी वस्तु है, किसी भी तिजोरी को वह बाहर से ही सूँघकर बतला सकता था कि उसमें क्या-क्या वस्तुएं हैं।

हे राजा विक्रम! यह लड़का जमीन सूंघकर बतला सकता था कि वहाँ संपत्ति दबी है या नहीं? लोग आते थे, उसको अपने साथ ले जाया करते थे। वह अपना शुल्क लेता और जवाब देता था। इस तरह वह अपनी जीविका उपार्जित करता था। उसके हाँ करने पर खजाना अवश्य निकलता था । इस प्रकार जमीन सूँघकर वह इस बात को भी बता सकता था कि कहाँ पर कुआँ या सरोवर बनवाने पर खारा या मीठा पानी निकलेगा? उसकी राय लेकर ही संपन्न लोग कुआँ या सरोवर बनवाया करते थे। इस विषय का वह अकेला गुणी था।

दूसरा लड़का स्त्री-पारखी था। किसी भी स्त्री को देखकर वह बतला सकता था कि वह किस गुण और स्वभाव वाली है। अतएव अपने विवाह के संबंध में लोग उसकी राय लिया करते थे। ब्राह्मण का यह लड़का अपने इस गुण के कारण अच्छी जीविका पाता था। यह उसका व्यवसाय था। दोनों भाइयों की घ्राण शक्ति गजब की थी।

राजा विक्रम! जो जन्म लेता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। धर्मात्मा ब्राह्मण मरणासन्न हो गया। उसे लकवा मार गया था। दोनों पुत्रों ने बड़ी सेवा की। वैद्यराज ने इलाज किया और कहा-कछुआ ले आओ। उससे इनके लकवे का इलाज संभव है।

दोनों भाइयों ने गंध के कारण कछुआ लाने से इंकार कर दिया। एक अन्य सेवक भेजा गया। सेवक कछुआ लेने गया। उसका धीवर से झगड़ा हो गया। राजा के सिपाही सेवक को पकड़कर ले गए। सेवक को छुड़ाने दोनों भाई गए और राजा से सब वृत्तांत कहा।

राजा ने पूछा- जब तुम्हारे पिता बीमार हैं तो तुम कैसे पुत्र हो, जो स्वयं कछुआ लेने नहीं गए। दोनों ने गंध की बात कही। सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने दोनों भाइयों से कहा-हम तुम्हारे पिता का इलाज कर देंगे। तुम लोग हमारी सेवा में रहो।

दोनों लड़कों ने बात मान ली। हे राजा विक्रम, राजा के इलाज के कारण वह धर्मात्मा ब्राह्मण शीघ्र ठीक हो गया।

दोनों ब्राह्मणपुत्र राजा की सेवा में लग गए। एक दिन की बात है। एक कीमती हार को लेकर दो व्यक्ति आपस में लड़ते हुए राजदरबार में आए।

दोनों हार को अपना बतला रहे थे और अपने-अपने प्रमाण भी दे रहे थे।

राजा ने तब दूसरे लड़के से कहा-फैसला करो, हार किसका है।

ज्ञानी का ज्ञान

धर्मात्मा ब्राह्मण के लड़के ने बारी-बारी से दोनों के हाथ सूंघे। फिर हार को सूँघकर उसने यह बतलाया कि हार मोटे आदमी का है।

मोटा आदमी प्रसन्नता से चीख पड़ा-महाराजाधिराज की जय हो। उचित निर्णय है।

दूसरे ने भी बात मान ली।

तब तुम हार अपना क्यों बतला रहे थे? राजा ने पूछा

अन्नदाता क्षमा करें। हमनें इन लड़कों के बारे में सुन रखा था। इस कारण परीक्षा लेने का मन हो गया। हम ब्राह्मण हैं, महाराज।

राजा प्रसन्न हो गया। लड़के की योग्यता की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दोनों का सम्मान बढ़ गया। समय बीतता गया। राजा के राज्य में एक अत्यंत रूपवती गणिका आई। उसके सौन्दर्य का समाचार राजा को मिला। राजा ने धर्मात्मा ब्राह्मण के लड़कों से कहा कि वह परखकर बताएं, गणिका कैसी है? दोनों ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

दोनों गणिका के पास गए । उस समय वह अपने बगीचे में झूला झूल रही थी। दोनों ने उसको देखा। वह उसके पास गए। गणिका ने उनका स्वागत किया। धर्मात्मा ब्राह्मण का बड़ा लड़का गणिका पर मोहित हो गया। गणिका भी उसकी ओर आकर्षित हो गई। वार्तालाप कर दोनों राजा के पास लौट आए।

"कैसी है वह?

"अनुपम सुन्दरी है, महाराज! " बड़ा लड़का।"

"गुणों की क्या बात है?"

"अन्नदाता गणिका सरल स्वभाव की है। उत्तम चरित्र है, पर वर्णसंकर संतान है। इसी विवशता के कारण उसका वरण करने के लिए कोई तैयार नहीं है। फलत: वह गणिका बन गई है।"

राजा ने गणिका को अपने दरबार की नर्तकी बना दिया। वह राजा की बात सुनकर हैरान रह गई। बोली-"महाराज! आपको मेरे माता-पिता का ज्ञान कैसे हो गया? यह तो अत्यन्त गोपनीय विषय है।"

राजा ने धर्मात्मा ब्राह्मण के लड़के का गुण बतला दिया। गणिका का प्रेम और बढ़ गया । उसने बड़े लड़के को अपने निवास पर आमंत्रित किया तथा भोग-विलास किया।

धर्मात्मा ब्राह्मण का बड़ा लड़का बोला-तुम तो मुझे दुख दे रही हो।"क्यों?"

तुम्हारे उस गद्दे में एक बाल है, वह चुभ रहा है।"हाँ, प्रिय! "

उस शानदार गद्दे से सेमल की रुई की तहों में से सचमुच एक बाल निकला। गणिका चकित रह गई। वह गदगद हो गई। उनका प्रेम और प्रगाढ़ हो गया।

दोनों आनन्दयुत रहने लगे। ऐ न्यायप्रिय राजा विक्रम! बतलाओ कि दोनों में से कौन अधिक गुणी है? बड़ा लड़का या छोटा लड़का? विक्रम से वेताल ने पूछा। विक्रम चुप रहे। वेताल ने अपना प्रश्न दोहराया, जवाब दो विक्रम!"

देखो वेताल ! राजा विक्रम ने कहा-

"ज्ञानी के ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। दोनों अपने स्थान पर योग्य हैं।"

"रुई में छिपा बाल लड़के को चुभा क्यों?" वेताल ने पूछा।"किसी नीच पशु का बाल रहा होगा।"

"तुम ठीक कहते हो राजा विक्रम!" वेताल ठठाकर हंस पड़ा।

उसने भागने का प्रयास किया, पर इस बार वह विक्रम की पकड़ से निकल न सका। छटपटाकर रह गया। राजा विक्रम की पकड़ से खुश होकर तेज-तेज चल पड़े। अब वह वेताल को भागने नहीं देंगे। उसे लेकर श्मशान तक जरूर पहुँच जाएंगे।

आओ सीखें बच्चों!

जिस देश में तुम्हारा जन्म हुआ,
उस देश के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिस देश में तुम्हारा पालन हुआ,
उस देश के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिन माता-पिता ने तुम्हें जन्म दिया,
उन माता-पिता के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिन शिक्षकों ने तुम्हें विद्या दी,
उन शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिन भाई-बहिनों ने तुम्हें अपना माना,
उन भाई-बहिनों के प्रति कृतज्ञ रहो।

जिन मित्रों ने तुमसे मित्रता की,
उन मित्रों के प्रति कृतज्ञ रहो।

राजभाषा की संवैधानिक स्थिति एवं उसका अनुपालन

भारतीय संविधान सभा द्वारा दिनांक 14 सितम्बर सन् 1949 को 'हिन्दी' को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। परिणामस्वरूप दिनांक 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार यह प्रावधान किया गया कि संघ सरकार की राजभाषा 'हिन्दी' एवं इसकी लिपि 'देवनागरी' होगी तथा संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप होगा। अनुच्छेद 343 (2) के तहत यह प्रावधान किया गया कि संविधान लागू होने के पन्द्रह वर्ष की अवधि तक अंग्रेजी भाषा संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाती रहेगी। हालाँकि अनुच्छेद 343 (3) के तहत यह प्रावधान भी दिया गया है कि यदि संसद चाहे तो विधि द्वारा पन्द्रह वर्ष के पश्चात् भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रख सकती है। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व भी सौंपा गया कि वह भारत की सामाजिक, साँस्कृतिक तत्वों तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं इसकी अभिवृद्धि सुनिश्चित करे।

संघ की राजभाषा का प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर कई प्रकार के अधिनियम/नियम एवं अन्य उपबंध बनाए गये हैं। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (4) के तहत सन् 1976 में एक संसदीय राजभाषा समिति का गठन भी किया गया है। संसदीय समिति, राजभाषा के कार्यान्वयन को सुनिश्चित कराने के साथ-साथ संघ के सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा भी करती है। समीक्षा के उपरान्त समिति अपनी रिपोर्ट गृहमंत्री के माध्यम से सीधे देश के माननीय राष्ट्रपति के सम्मुख प्रस्तुत करती है। उल्लेखनीय है कि सन् 1963 में बने राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के तहत निम्नलिखित दस्तावेज हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में एक साथ निकाले जाने अनिवार्य हैं:

- संकल्प (Resolutions)
- सामान्य आदेश (General orders/Circular)
- नियम (Rule)
- अधिसूचनाएं (Notification)
- प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट (Administrative & other report)
- विज्ञापन (Advertisement)
- प्रेस विज्ञप्तियाँ (Press releases)
- संविदा (Contract)
- करार (Agreements)
- सूचनाएं (Notices)
- निविदा (Tender)
- लाइसेंस (License)
- परमिट (Permit)

सन् 1976 में बने राजभाषा नियमों के तहत निम्नलिखित का अनुपालन भी किया जाना अनिवार्य है।

1. विभाग/अनुभाग के समस्त कोड, मैनुअल, प्रपत्र आदि द्विभाषी रूप में (अर्थात् हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में) तैयार कराए जाने चाहिए।
2. विभाग/अनुभाग की प्रशिक्षण सामग्री द्विभाषी रूप में तैयार कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।
3. राजभाषा नियम 5 के तहत हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिये जाने चाहिए।
4. रबड़ की मोहरें, साइन बोर्ड, नाम पट्ट, लेखन सामग्री आदि समस्त द्विभाषी रूप में तैयार कराई जानी चाहिए। इन सभी को तैयार कराते समय पहले हिन्दी और उसके पश्चात अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिन्दी का फॉन्ट अंग्रेजी के फॉन्ट से बड़ा या फिर बराबर अवश्य होना चाहिए।

नमूना

Head
Chemical Engineering
Indian Institute of Technology Kanpur
विभागाध्यक्ष
रासायनिक अभियांत्रिकी
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

Head/विभागाध्यक्ष
Chemical Engineering/रासायनिक अभियांत्रिकी
Indian Institute of Technology Kanpur/भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

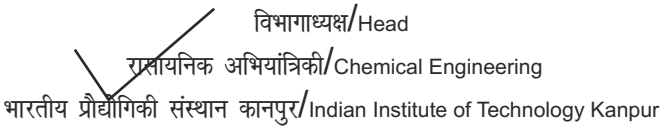

5. रजिस्टरों के शीर्षक आदि द्विभाषी रूप में होने चाहिए तथा इनमें प्रविष्टियां भी हिन्दी में की जानी चाहिए ।
6. सभी प्रकार के विज्ञापन हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में एक साथ जारी किये जाने चाहिए ।
7. देवनागरी अंकों के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप अर्थात् १,२,३,४,५,६,७,८, के स्थान पर 1,2,3,4,5,6,7,8,9 का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
8. विभाग/अनुभाग के समस्त कम्प्यूटर यूनिकोड (हिन्दी फॉन्ट) समर्थित कराए जाने चाहिए ।
9. पत्राचार के दौरान अंग्रेजी के शब्द जो हिन्दी भाषा में मिल-जुल गये हैं जैसेः बैंक, टाइपिस्ट, टेलीफोन आदि का प्रयोग देवनागरी लिपि में किया जा सकता है।
10. अहिन्दी भाषी प्रदेशों में साइन बोर्ड, नामपट्ट आदि त्रिभाषिक रूप में प्रदर्शित किये जाने चाहिए अर्थात् ऐसी स्थिति में भाषाओं का क्रम होगाः 1. प्रदेश की राजभाषा 2. हिन्दी 3. अंग्रेजी ।
11. क्षेत्र 'क' के कार्यालयों/व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर हिन्दी में ही पता लिखा जाना चाहिए।
12. क्षेत्र 'ग' में स्थित कार्यालयों से हिन्दी में पत्र व्यवहार किया जा सकता है परन्तु उस पत्र का अंग्रेजी रूपान्तर भी भेजा जाना अपेक्षित है लेकिन यदि क्षेत्र 'ग' में स्थित ऐसे कार्यालय जहाँ पर 80 प्रतिशत कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, के साथ हिन्दी में पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

वैसे तो केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करें कि उक्त अधिनियमों/नियमों तथा उपबंधों का समुचित रूप से पालन हो रहा है, परन्तु केन्द्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हम सभी का भी यह संवैधानिक उत्तरदायित्व है कि हम सभी ईमानदारी एवं गंभीरता से इनका अनुपालन करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रयोग की गति को बढ़ावा देने में अपना सहयोग प्रदान करें। इस प्रयास एवं सहयोग से निश्चित रूप में हिन्दी को राजभाषा के रूप में उसे उसका सही स्थान प्राप्त हो सकेगा।

संकलनः राजभाषा सहायिका

व्याकरण की परिभाषा

हिंदी के सार्वकालिक महान वैयाकरण पं. कामताप्रसाद गुरु के शब्दों में जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के नियमें का निरूपण होता है। उसे व्याकरण कहते हैं। प्रमुख आधुनिक भाषाविज्ञानी डॉ. हरदेव बाहरी ने उक्त परिभाषा से प्रायः सहमति प्रकट करते हुए कहा है "व्याकरण वह शास्त्र है जो शब्दों के रूपों और प्रयोगों का निरूपण करता है।" दोनों प्रमुख वैयाकरणों के दृष्टिकोण में अंतर यह है कि गुरुजी शब्दों के शुद्ध रूप और प्रयोग के निरूपण की बात करते हैं और बाहरी जी शब्दों के रूपों और प्रयोगों के निरूपण की बात करते हैं।

आधुनिक वैयाकरण शब्दों के रूपों और प्रयोगों की शुद्धता की बात नहीं करते। शब्द का जो रूप और प्रयोग लोक में प्रचलित होता है उसे वे मानक अर्थात् प्रशस्त और मान्य बताते हैं, भले ही शुद्धतावादी उसमें मीनमेख क्यों न निकालें। शुद्धतावादी नियम-विरुद्ध प्रचलित शब्दों तथा प्रयोगों को अशुद्ध ठहराते हैं और उनका विरोध करते हैं परंतु देखने में यह भी आता है कि शुद्धतावादियों के द्वारा अशुद्ध ठहराए गए शब्द-रूप और भाषा-प्रयोग व्यवहार में बने रहते हैं और समय पाकर स्वीकार्यता भी प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार महत्व और प्रमुखता व्यवहार-सिद्ध अर्थात् प्रचलित शब्द-रूपों और भाषा-प्रयोगों को ही मिलती है। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए व्याकरण की परिभाषा हम इस प्रकार कर सकते हैं -

व्याकरण से अभिप्राय निरीक्षण तथा अनुभव पर आधारित उन नियमों से होता है जिनके द्वारा किसी भाषा के लोक-स्वीकार्य शब्द-रूपों और भाषा-प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण किया जाता है। हिंदी व्याकरण में हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द-रूपों तथा भाषा-प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण किया जाता है।

संकलन – व्याकरण सहचर

कार्यालयीन उपयोगी टिपण्णियाँ /शब्द

बेबाकी पत्र	No demand certificate
विसंगति का समाधान कर लिया जाए	Discrepancy may be reconciled
यथा आवश्यक कार्यवाही के लिए	For such action as may be necessary
कार्यालय ध्यान दे और पालन करे	Office to note and comply
शीघ्र अनुपालन कीजिए	Please expedite compliance
नौकरी बहाल की गई	Reinstated in service
हस्ताक्षर और मुहर सहित	Under signature and seal
अगले आदेश होने तक	Till next order
नजर चूक जाने से	Through oversight
कागज दबाकर बैठना	Hiding the papers
यथापूर्व स्थिति	Status quo
आगे और आदेश भेजे जाएँगे	Further orders will follow

रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक बधाई !

राजभाषा सेवा संस्थान द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं चिंतन शिविर में आयोजित ''श्रेष्ठ हिंदी पत्रिका'' प्रतियोगिता 'क' श्रेणी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर की पत्रिका ''अंतस'' को विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संपर्क

राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष-0512-259-7122
ईमेल-blohani@iitk.ac.in, vedps@iitk.ac.in, sunitas@iitk.ac.in

http://www.iitk.ac.in/infocell/iitk/newhtml/Antas/

अभिकल्प (Design), संकलन
सुनीता सिंह